डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

सोलहवाँ ऐतिहासिक नाट्योत्सव

20 से 22 फरवरी, 2025

प्रेमचंद रंगशाला, राजेन्द्र नगर, पटना

1993 ई. में मगध कलाकार के 41वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर अभिनीत 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' नाटक में अभिनय करते अनन्त कुमार (सम्राट अशोक), गीताजंलि वर्मा (तिष्यरक्षिता) और रूपक प्रियदर्शी (नेत्रहीन राजकुमार कुणाल)

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला जागरण, पटना

सौजन्य - कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

सौजन्य : कला-संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में

सोलहवाँ ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव
2025

बिहार, पटना

20 से 22 फरवरी, 2025

सम्पादक

प्रणय कुमार सिन्हा

स्थान

प्रेमचंद रंगशाला,

राजेन्द्र नगर, पटना

✤✤

आयोजक

मगध कलाकार एवं कला जागरण, पटना

वेबसाइट/ईमेल : www.chaturbhujdrama.com / apriyadarshi76@yahoo.in/apriyadarshi738@gmail.com/kalajagran@rediffmail.com

अध्यक्ष की कलम से

सुनील कुमार सिन्हा
अध्यक्ष, मगध कलाकार, पटना

इतिहास-पुराण की जटिल घटनाओं को वर्तमान समस्याओं से जोड़कर रंगमंचीय ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से दर्शकों के बीच लोकप्रिय रहने वाले लेखक डॉ. चतुर्भुज आज भी सजीव बनें हैं। उन्होंने लगभग चालीस रंगमंचीय नाटकों की रचना की। सभी नाटक ग्रामीण मंच पर जितने प्रशंसनीय रहे उतने ही शहरी मंचों पर प्रशंसित हुए। ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव कार्यक्रम के आयोजक मगध कलाकार के सचिव डॉ. अशोक प्रियदर्शी और कला जागरण के सचिव वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं। आप दोनों स्वैच्छिक सांस्कृतिक संस्था मगध कलाकार और कला जागरण के संयुक्त तत्वावधान में पिछले सोलह वर्षों से पाटलिपुत्र की पावन भूमि पर अनेक समस्याओं से जूझते हुए भी ऐतिहासिक नाटकों का महोत्सव निरंतर करते आ रहे हैं। देश का एकमात्र शहर पटना ही है जहाँ ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव का आयोजन किया जाता है। डॉ. चतुर्भुज की सोच थी कि पंचम वेद नाटक लोक मनोरंजन के साथ समाज में सद्भाव पैदा करने का एक सशक्त माध्यम है।

सोलहवाँ ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव त्रिदिवसीय है। दो नाटकों के लेखक नाटककार डॉ. चतुर्भुज हैं। पहला नाटक बौद्ध साहित्य के दिव्यावदान की कथा कुणालावदान पर आधारित है-'पाटलिपुत्र का राजकुमार' जिसकी प्रस्तुति पटना के रंगकर्मियों द्वारा किया जा रहा है और दूसरा नाटक महाभारत की कथा पर आधारित है-'भीष्म प्रतिज्ञा' जिसकी प्रस्तुति पण्डारक के रंकर्मियों द्वारा किया जाएगा। तीसरे दिन का नाटक है-'क्रांतिकारी जुब्बा भाई'। यह नाटक दरभंगा के रंगकर्मियों द्वारा तैयार किया गया है। सोलहवें ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव की ओर से इस दफा तीनों दिन संध्या 5 बजे से तीन सामाजिक नुक्कड़ नाटकों का भी प्रदर्शन किया जाएगा। हम आभारी रहेंगे कि जिस तरह प्रति वर्ष सुधी दर्शकों, पत्रकारों, साहित्यकारों, रंगकर्मियों का सहयोग मिलता रहा है, इस दफा भी मिलेगा।

सुनील कुमार सिन्हा
अध्यक्ष, मगध कलाकार, पटना

कला-जागरण : **गणेश प्रसाद सिन्हा, अध्यक्ष**
C/11, ककड़बाग कॉलोनी, पटना-20,
(मो. 09431622131)
: **सुमन कुमार, सचिव**
सुन्दरी भवन, देवी स्थान, बंगाली टोला,
पूर्वी मीठापुर फार्म, पटना-1
(मो. 9431066931)

साज-सज्जा : फकीर मुहम्मद/ कवर डिजाइन : गोलू कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक : आदित्य पब्लिकेशन, तागमंडल के सामने, हथुआ पाठशाला के पास, दक्षिणी मंदिरी, पटना-800001
मो.-9576099416 / 9709663354
adityapublication2019@gmail.com

मगध कलाकार : **सुनील कुमार सिन्हा**
अध्यक्ष
जानकी अपार्टमेंट, चित्रगुप्त नगर,
पटना-800020
(मो. 7488694395)

: **डॉ. अशोक प्रियदर्शी, सचिव**
क्वार्टर नं.-106, रोड नं.-6, श्रीकृष्ण नगर,
पटना-800001
(मो. 09334525657/9709810010)

प्रणव कुमार, भा॰प्र॰से॰
सचिव
Pranav Kumar, IAS
Secretary

बिहार सरकार

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार सरकार, नया सचिवालय,
विकास भवन, पटना-800015
Department of Art Culture & Youth
Govt. of Bihar, New Secretariat
Vikas Bhawan, Patna-800015
Tel. No. : 0612-2211619
E-mail : secart-bih@nic.in

शुभकामना-संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कला जागरण द्वारा 16 वें डॉ0 चतुर्भुज स्मृति ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव-2025 का आयोजन दिनांक-20 से 22 फरवरी 2025 तक प्रेमचंद रंगशाला, पटना में किया जा रहा है।

रंगमंचीय ऐतिहासिक नाटकों की अपनी पहचान होती है, जो अतीत से तो जोड़ती हीं है, रंगमंच के विविध आयामों से भी परिचित कराती है। मुझे उम्मीद है कि यह नाट्योत्सव बिहार के रंगमंच में नया अध्याय जोड़ेगा।

इसके लिए इस अवसर पर सर्वसाधारण के लिये प्रकाशित होने वाली स्मारिका पठनीय, संग्रहणीय एवं ज्ञानवर्द्धक होगी। मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन की भी कामना करता हूँ तथा इस कार्य से जुड़े सभी नाट्यकारों एवं आयोजन समिति के सभी सदस्यों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

(प्रणव कुमार)

संक्षिप्त परिचय

नाटककार डॉ. चतुर्भुज

नाम : डॉ चतुर्भुज
जन्म तिथि : 15/01/1928 ई. महाप्रयाण : 11/08/2009 ई.
जन्म स्थान : मुहल्ला- महलपर, बिहार शरीफ, जिला-नालन्दा
शिक्षा : (क) एम.ए. (पालि और बौद्ध साहित्य में)
(ख) पी-एच.डी., (शोध विषय- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक- एक अध्ययन')
पिता : स्व. मुंशी प्रयाग नारायण
वेबसाइट : www.chaturbhujdrama.com

मगध कलाकार का पता : क्वाटर नम्बर-106, रोड नम्बर-06, श्री कृष्ण नगर, पटना-800001 (बिहार) फोन : 9334525657, 9709810010

उपलब्धियाँ

1. डॉ. चतुर्भुज का जन्म बिहार में हुआ। उन्होंने अपने जीवन के इक्यासी बसंत देखा। सारा जीवन उन्होंने हिन्दी के माध्यम से नाट्य-लेखन, प्रस्तुतिकरण, निर्देशन, मंचन, अभिनय कला के प्रचार-प्रसार में लगा दिया और नाट्यकला के विकास में प्रयत्नशील रहे। नाटक के अलावा अन्य साहित्य विधाओं में भी इन्होंने रचना की है।
2. विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों में इनके कार्यों और उपलब्धियों का उल्लेख आया है। जैसे:- साहित्य अकादमी के 'हूज हू' में, डॉ. दशरथ ओझा के 'हिन्दी नाटक कोश' में, डिस्टिंगयूइस्ड यूथ ऑफ इन्डिया 'हूज हू' (पृष्ठ-146) में, 'बायोग्राफी इन्टरनेशनल' में, 'एशिया पेसेफिक हूज हू' में, 'एशियन अमेरिकन हूज हू' में, लर्नेड एशिया' में, तथा अनेक संदर्भ ग्रन्थों में इनके नाम का और इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। 'रेफरेन्स एशिया' में इनके बारे में विस्तार से उल्लेख है जिसमें एशिया के चुने हुए लगभग 1500 व्यक्ति ही सम्मिलित किये गये हैं। इनके अलावा नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से प्रकाशित और डॉ. प्रतिभा अग्रवाल द्वारा सम्पादित 'रंगकोश' के दोनों खंडों में डॉ. चतुर्भुज का उल्लेख किया गया है। नौवीं कक्षा के लिए बिहार टेक्स्ट बुक कमिटि द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'वर्णिका' के 'बिहार की नाट्यकला' अध्याय में डॉ. चतुर्भुज का नाटक में योगदान पर प्रकाश डाला गया है।
3. नाटक और थियेटर के प्रति डॉ. चतुर्भुज के योगदान पर अनेक विद्वानों ने एम.फिल. और पी-एच.डी. (कर्नाटक विश्वविद्यालय/ ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा/मगध विश्वविद्यालय आदि) के लिए शोध कार्य किया। कर्नाटक में एक विद्वान को डॉ. चतुर्भुज के पौराणिक नाटकों पर शोध करने में पी-एच.डी. की डिग्री से सम्मानित किया जा चुका है।

रंगमंच :-

4. डॉ. चतुर्भुज की मान्यता थी कि नाटक सिर्फ एक विधा ही नहीं है बल्कि इसमें साहित्य, कला, विज्ञान सभी कुछ है। अर्थात् अभिव्यक्ति का यह सबसे सशक्त और समन्वित माध्यम है। जब नाटक लिखा जाता है तब यह साहित्य है, तैयारी के समय इसमें विभिन्न कलायें जुड़ती हैं और मंचन के दौरान प्रकाश, ध्वनि, मेकअप, सेट निर्माण आदि विज्ञान विषयक बातें आती हैं। डॉ. चतुर्भुज ने अपने पूरे जीवन में इन विषयों का मनन किया है और इसे व्यवहार में भी वे लाते रहे।
5. नाटक को पंचम वेद की संज्ञा देने के बाद भी हिन्दी की उपेक्षित विधा नाटक और रंगमंच है। डॉ. चतुर्भुज ने साहित्य और कला के रूप में इसे समृद्ध किया। इसे रोजी-रोटी से जोड़ कर बेरोजगारों को एक नई दिशा दी। इसी उद्देश्य से संघर्ष करते हुए उन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्यशास्त्र एक स्वतन्त्र विषय के रूप में प्रारम्भ कराया। सरकारी सेवा से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे वहां प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में ढाई साल तक सेवारत रहे। आगे चल कर इन्होंने इन्टरमीडिएट स्तर पर नाटक को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकृति प्रदान कराई।

6. डॉ. चतुर्भुज का प्रयास स्मरणीय माना जायेगा कि उन्होंने 2024 में भारत रत्न से अलंकृत और बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर जी से मिल कर बिहार में नाट्य प्रदर्शन पर लग रहे मनोरंजन कर को समाप्त कराया और बिहार में नाट्य प्रदर्शन, मनोरंजन-कर से मुक्त हुआ। इससे हिन्दी रंगकर्मियों को काफी लाभ हुआ है।
7. सन् 1952 ई. में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दी और रंगमंच के प्रचार-प्रसार के लिए मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) सांस्कृतिक संस्था की स्थापना की और प्रमुख रूप से ग्रामीण अंचलों में हिन्दी में नाट्य प्रदर्शन किये। आज के लोग ग्रामीण अंचलों में जाना नहीं चाहते। डॉ. चतुर्भुज इसके अपवाद थे। इनके नाम से ग्रामीण अंचलों के सभी बड़े-छोटे रंगकर्मी परिचित हैं।
8. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे रंगकर्मी रहे जिन्होंने पारसी युग के नाटकों में अभिनय, निर्देशन करते हुए हिन्दी युग के नाटकों को एक नई दिशा देने का सफल प्रयास किया। उन्होंने हिन्दी नाट्य लेखन में एक नई शैली दी। इतिहास में छिपे चरित्रों और घटनाओं को नाटक के माध्यम से युवा वर्ग को परिचित कराने का सफल प्रयास किया। उन्होंने पारसी युग से बढ़ते हुए आज के नुक्कड़ नाटकों और टैरिस (Terrace) थिएटर तक का एक लम्बा सफर तय किया था।
9. डॉ. चतुर्भुज ने लगभग 300 से अधिक हिन्दी नाट्य प्रदर्शनों में लेखक, निर्देशक, अभिनेता के रूप में भाग लिया। इन प्रदर्शनों से हिन्दी का बड़ा प्रचार-प्रसार हुआ।
10. फिल्म और रंगमंच के चर्चित कलाकार पृथ्वीराज कपूर उनके नाटक 'कलिंग-विजय' को देखने के लिए स्वयं अपने रंगकर्मियों के साथ बख्तियारपुर (पटना जिला) आये थे। उन्होंने डॉ. चतुर्भुज की लगनशीलता देख उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। बम्बई लौटने के बाद भी डॉ. चतुर्भुज के साथ श्री कपूर का सम्बन्ध बना रहा।
11. नव नालन्दा महाविहार, नालंदा के प्रांगण में आयोजित कॉन्वोकेशन (1977) और द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन (1980) में डॉ. चतुर्भुज ने अपनी संस्था के कलाकारों द्वारा बौद्ध ग्रंथ 'दिव्यावदान' के कुणालावदान की कथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' का मंचन कराया। उस अवसर पर कई देश के बौद्ध विद्वानों के साथ आस्ट्रेलिया के इतिहासकार डॉ. ए.एल. बाशम और बौद्ध विद्वान भदन्त आनन्द कौसल्यायन भी उपस्थित थे। नाटक देखकर उन विद्वानों के साथ अन्य दर्शक भावुक हुए थे।
12. अपनी सांस्कृतिक संस्था 'मगध कलाकार' के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज ने न सिर्फ हिन्दी रंगमंच को गौरवान्वित किया था बल्कि नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से अर्जित राशि एकत्रित कर अनेक सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं और सरकार को प्रदान कर गौरव प्राप्त किया था। वे कुछ प्रमुख सरकारी एवं गैरसरकारी सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाएं हैं- एस.यू. कॉलेज, हिलसा/ जमुई में स्थापित स्टेडियम/ रांची समाज कल्याण समिति/ मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष/ महिला महाविद्यालय, खगौल/ प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष/ राष्ट्रीय सुरक्षा कोष आदि।
13. अपनी संस्था के कलाकारों और बौद्ध भिक्षुओं का दल लेकर डॉ. चतुर्भुज ने बिहार का प्रतिनिधित्व करते हुए राजधानी दिल्ली के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर 1957 ई. में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रस्तुत की और पुरस्कृत हुए। पटना के गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर झाकियों का प्रदर्शन इनके प्रयास से ही सन् 1979 ई. से आरम्भ किया गया जो आज तक गतिशील है।
14. सरकारी सेवा से निवृत्त होने के दस वर्षों के बाद डॉ. चतुर्भुज ने मगध विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की थी। इनके शोध का विषय था- 'प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटक और प्राचीन यूनानी नाटक-एक अध्ययन'।
15. हिन्दी को रंगमंचीय दृष्टि से समृद्ध करने के लिए उन्होंने दो प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृत नाटकों का हिन्दी रंगमंचीय रूपान्तर करके सफलतापूर्वक उन्हें मंचित किया। ये नाटक हैं- 'शकुन्तला' और 'मुद्राराक्षस'।
16. उत्तर-दक्षिण की सांस्कृतिक एकता पर आधारित इनका साहित्यिक हिन्दी मौलिक नाटक 'रावण' पटना के कालिदास रंगालय के मंच पर लगातार तीन माह तक छुट्टियों के दिन मंचित होता रहा। उसे काफी प्रशंसा मिली। यह नाटक मील का पत्थर साबित हुआ। इस नाटक से प्रभावित होकर बिहार आर्ट थिएटर के संस्थापक निदेशक अनिल कुमार मुखर्जी ने इसका बंगला अनुवाद किया। कालान्तर में रावण नाटक का मैथिली अनुवाद युवा पत्रकार लक्ष्मी कान्त सजल ने किया। अंग्रेजी अनुवाद का श्रेय बिहार सरकार के अवकाश

प्राप्त पदाधिकारी कुमार शांत रक्षित को जाता है। भाषा संगम, इलाहाबाद के महासचिव डॉ. एम. गोविन्द राजन ने इस नाटक का तमिल भाषा में अनुवाद किया जिसका प्रकाशन चेन्नई से किया गया। बंगला भाषा और अंग्रेजी भाषा में अनूदित रावण नाटक के प्रकाशन की प्रतीक्षा पाठकों में बनी है।

17. डॉ. चतुर्भुज के अन्य कई ऐतिहासिक नाटकों का मैथिली और अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है जिनका प्रकाशन अभी नहीं हो पाया है।

नाट्य-लेखन :-

18. हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देख डॉ. चतुर्भुज ने नाट्य-लेखन की ओर अपना कदम बढ़ाया। उनका पहला नाटक था- मेघनाद। नाट्य प्रदर्शन की सफलता के बाद अन्य रंगकर्मियों की मांग पर उन्होंने इसका प्रकाशन किया। फिर तो नाट्य-लेखन, प्रदर्शन के बाद प्रकाशन की ओर उन्हें कदम बढ़ाना अनिवार्य हो गया। प्रत्येक वर्ष हर रंग संस्था की मांग होती दशहरे के मौके पर डॉ. चतुर्भुज लिखित कोई नवीनतम नाटक ।
19. डॉ. चतुर्भुज का लेखन भारत विभाजन से पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। उनकी कहानियाँ, लेख, संस्मरण आदि का प्रकाशन उन पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे थे जो पत्रिकाएं आज या तो बन्द हो गयी हैं अथवा भारत विभाजन के बाद इन दिनों वे पत्रिकाएं पाकिस्तान क्षेत्र में चली गई हैं। उस समय की चर्चित पत्र-पत्रिकाएं रही हैं- विश्वमित्र (कलकत्ता), लक्ष्मी (लाहौर), ज्योत्स्ना, हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नवनीत, सत्यकथा आदि।
20. डॉ. चतुर्भुज के प्रकाशित रंगमंचीय नाटकों की संख्या चालीस से अधिक हैं। रेडियो-टेलिविजन के लिए भी इन्होंने सैकड़ों नाटक और रूपक लिखे। 'बाबू विरंचीलाल' नामक टेलीफिल्म का निर्माण भी किया।
21. उत्तर-प्रदेश की सरकार ने डॉ. चतुर्भुज को उनकी एक नाट्य पुस्तक (मीरकासिम) पर पुरस्कृत किया है। केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय (संस्कृत), बिहार राजभाषा विभाग आदि ने इनके हिन्दी नाटकों के प्रकाशन के लिए समय-समय पर आर्थिक अनुदान दिये हैं।
22. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे नाटककार रहे जिन्होंने विदेशी चरित्रों को अपने नाटकों में स्थान दिया। वे चरित्र ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहे। उनके नाटकों में अंग्रेज, फ्रेंच, इटैलियन, ग्रीक, चीनी आदि चरित्र रहे हैं। चरित्रों को सजीव बनाने के लिए उन्हें संबन्धित देश के दूतावासों से बराबर सम्बन्ध बनाये रखना पड़ा था।
23. डॉ. चतुर्भुज के चुने हुए पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक रंगमंचीय नाटकों का संग्रह तीन खंडों में 'चतुर्भुज रचनावली' दिल्ली से समय प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इनकी कुल पृष्ठ संख्या लगभग 1500 है।
24. समय प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास' डॉ. चतुर्भुज की उल्लेखनीय पुस्तक कही जायेगी जिसमें उन्होंने प्रमुख भारतीय भाषाओं के नाटकों के अलावा यूनानी, अंग्रेजी, फ्रेंच, अमेरिकन, रूसी, जर्मन, इटैलियन, चीनी, जापानी, भाषाओं के नाटकों का इतिहास भी है। हिन्दी में इस प्रकार का यह पहला ग्रन्थ है जिसमें इतनी भाषाओं के नाटकों का इतिहास एक स्थल पर उपलब्ध है। इसके लेखन में विदेशी दूतावासों ने भी सामग्री और चित्र दिये हैं।
25. अपने जीवन के अन्तिम समय में डॉ. चतुर्भुज रंगकर्म के व्यवहारिक पक्ष को ध्यान में रखकर एक पुस्तक लिख रहे थे- 'नाट्य-शिल्प-विज्ञान'। सात अध्याय का लेखन हो चुका था लेकिन असामयिक उनकी मृत्यु हो गई। पुस्तक अधूरी है। लेकिन उसके प्रकाशन की योजना बन रही है ताकि रंगकर्मी उस पुस्तक से लाभान्वित हो सकें।
26. इतिहास डॉ. चतुर्भुज का प्रिय विषय रहा था। यही मूल कारण है कि उन्होंने इतिहास विषयक चरित्रों को नाटक के माध्यम से सजीव किया। नाट्य लेखन के साथ ही उन्होंने तीन ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। **'समुद्र का पक्षी'** ऐतिहासिक उपन्यास इटैलियन यायावर मनूची के जीवन चरित्र पर आधारित है जिसने शिवाजी और औरंगजेब के युद्ध को अपनी आंखों से देखा था और उसने स्वयं उसमें भाग भी लिया था। दूसरा उपन्यास **राजदर्शन** है। यह उपन्यास मुंगेर के नवाब मीरकासिम के चरित्र पर आधारित है जिसने अल्पकाल के शासनकाल में ही इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया था। तीसरा उपन्यास है भगवान बुद्ध के गृह-त्याग से लेकर

SCAN AnyScanner

उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित- **'तथागत'**। इन उपन्यासों में तात्कालिक सामाजिक, राजनीतिक घटनाओं का सजीव चित्रण है।

27. जहाँ एक ओर 1857 के वीर सेनानी पीरअली, कुंवरसिंह, झांसी की रानी, बहादुरशाह जैसे नाटकों में डॉ. चतुर्भुज ने हिन्दु-मुस्लिम एकता और सर्वधर्म समन्वय को दर्शाने का सफल प्रयास किया है, वहीं अरावली का शेर, भीष्म-प्रतिज्ञा, शिवाजी, सिकन्दर-पोरस, टीपू सुल्तान में भारतीय इतिहास और संस्कृति को गौरवान्वित किया है। दूसरी ओर उनके नाटक कलिंग-विजय, पाटलिपुत्र का राजकुमार, प्रतिशोध, आदि में बौद्ध धर्म की घटनाएं सजीव रूप से चित्रित हुई हैं।

28. डॉ. चतुर्भुज लिखित उनकी आत्मकथा **'मेरी रंगयात्रा'** शीर्षक से समय प्रकाशन, नई दिल्ली से उनके मरणोपरान्त प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन के अनछुए पहलुओं का उल्लेख करते हुए बताया है कि नाटक और रंगमंच उनके जीवन की प्रतिछाया बना रहा।

बौद्ध साहित्य और दर्शन :-

28. आर्थिक अभाव के कारण डॉ. चतुर्भुज ने कभी कॉलेज का मुंह नहीं देखा। लेकिन पढ़ने की ललक उनमें लगातार बनी रही। परिवार के जीवन-यापन हेतु उन्होंने छोटी-छोटी कई नौकरियां की और फिर बख्तियारपुर-राजगीर तक चलने वाली मार्टिन कम्पनी की छोटी लाइन रेलवे की नौकरी स्वीकार की। प्राईवेट से ही उन्होंने आई.ए. और बी.ए. की परीक्षाएं पास की। बख्तियारपुर-राजगीर रेलवे में ड्यूटी करते हुए उनकी भेंट अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बौद्ध विद्वान भिक्षु जगदीश कश्यप जी से हुई। वे उस समय भारत सरकार से अनुदान प्राप्त कर, बौद्ध त्रिपिटक के देवनागरीकरण करने और उनके सम्पादन के कार्य में वे लगे थे। डॉ. चतुर्भुज ने उनके मार्ग-दर्शन में बौद्ध साहित्य का अध्ययन किया। उन्होंने एम.ए. की परीक्षा पास की। बौद्ध साहित्य और दर्शन का उन्हें ज्ञान मिला। फिर रेलवे की नौकरी छोड़ डॉ. चतुर्भुज जुड़ गये नव नालन्दा महाविहार से। देश-विदेश के नामी बौद्ध विद्वानों के साथ रहकर त्रिपिटक-सम्पादन-विभाग में चार साल तक पालि ग्रन्थों का देवनागरी में सम्पादन कार्य किया। यह हिन्दी और देवनागरी की विशिष्ट सेवा है। बौद्ध विषयक उनके अनेक नाटक और लेख प्रकाशित और प्रसारित हुए।

आकाशवाणी सेवा :-

29. संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से डॉ. चतुर्भुज का चयन आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिशासी (Programme Executive) के पद पर सन् 1959 में हुआ।

30. आकाशवाणी की सेवा करते हुए उन्होंने पटना, राँची, भागलपुर और दरभंगा क्षेत्रों में रहकर हिन्दी साहित्य और रंगमंच की सेवा की। आकाशवाणी के लिए उन्होंने अनेक रेडियो नाटक, रेडियो फीचर और बौद्ध साहित्य पर आधारित अनेक वार्त्ताएं लिखीं। कई रेडियो नाटकों और फीचरों का प्रसारण अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं में विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित हुए। सन् 1986 ई. में आकाशवाणी, दरभंगा से केन्द्र निदेशक के पद को सुशोभित करते हुए वे सेवा निवृत्त हुए। उनके प्रमुख रेडियो नाटक और फीचर रहे हैं- गणतन्त्र की भूमि वैशाली, पलासी का धूमकेतू, नेत्रदान, लाल कुंवरी, सफेद हाथी, अवन्ती की राजकुमारी, तलवारों के साये में, नव नालन्दा महाविहार, कलम के जादूगर रामबृक्ष बेनीपुरी, मिलिन्द-प्रश्न, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बैकठपुर का शिवमंदिर, पाटलिपुत्र से पटना तक, बाजीराव-मस्तानी, झेलम के किनारे, जहाँआरा, हैदरअली, रेडियो नाट्य शृंखला के अन्तर्गत जातक कथा पर आधारित तेरह धारावाहिक नाटक आदि।

पुरस्कार/सम्मान :-

31. 1998 ई. में अनिल कुमार मुखर्जी शिखर सम्मान, सन् 2000 में दिल्ली में आयोजित शताब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी सेवा के लिए डॉ. चतुर्भुज शताब्दी सम्मान से सम्मानित, सन् 2004 ई. में राष्ट्र गौरव-राष्ट्रकवि दिनकर सम्मान से सम्मानित, श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर प्रबन्धक समिति द्वारा हिन्दी नाटक में विशिष्ट योगदान हेतु सन् 2004 ई. में सम्मान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने उन्हें वयोवृद्ध साहित्यकार के रूप में सन् 2004 ई. में सम्मानित किया। 'मीरकासिम' नाट्य-लेखन पर उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, साहित्यकार-सम्मान-समिति द्वारा उन्हें नाटक एवं रंगमंच के लिए सम्मान, इसी तरह और भी अनेक संस्थाओं ने उनके नाट्य-लेखन, रंगमंच के प्रति समर्पित, हिन्दी सेवा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हेतु सम्मानित किया है।

पत्रकारिता :-

32. डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे प्रतिभाशाली लेखक-रंगकर्मी और प्रशासक रहे जिन्होंने अपने अनुभवों से, आगे की पीढ़ियों को लाभान्वित किया। सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में सेवा की। पटना आकर एक ओर वे यूनेस्को से मान्यता प्राप्त 'नाट्य-प्रशिक्षणालय', पटना में रंगकर्मियों को पारसी थियेटर की शिक्षा देते रहे, वहीं दूसरी ओर डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा पत्रकारिता और जन-संचार, डॉ. जाकिर हुसैन पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को भी रेडियो-पत्रकारिता और दूरदर्शन-पत्रकारिता की शिक्षा देते रहे। अपने जीवन-काल में डॉ. चतुर्भुज जहां भी रहे, रंगकर्मियों, पत्रकारिता और जन-संचार के छात्रों को शिक्षित ही करते रहे। उनके आवास पर भी लोगों का आगमन लगातार जारी रहा। सम्भवत: उनकी सहृदयता और उनके ज्ञान का सागर देखकर ही लोग उन्हें गुरुजी कहकर संबोधित करते रहे और रंगकर्मियों के बीच वे नाटक के भीष्म-पितामह कहे जाते रहे।

33. तत्कालीन लोकप्रिय पत्र-पत्रिका विश्वमित्र, ब्लिज, प्रदीप, आर्यावर्त्त, इंडियन नेशन के नालंदा के स्थानीय संवाददाता रहे।

डॉ. चतुर्भुज नाट्य-पत्रकारिता सम्मान- 2025

डॉ. उज्ज्वल कुमार

डॉ. उज्ज्वल कुमार

पिछले पंद्रह वर्षों से अधिक समय से लगातार पत्रकारिता कर रहे एक अनुभवी पत्रकार हैं डॉ. उज्ज्वल कुमार। वर्तमान में दैनिक जागरण आई नेक्स्ट के सम्पादक डॉ. उज्ज्वल कुमार ने देश की कई प्रसिद्ध पत्रकारिता समूह के साथ कार्य किया है जिसमें हिंदुस्तान टाइम्स समूह के तहत एक हिन्दी दैनिक हिंदुस्तान में मुख्य उप संपादक के रूप में कार्य भी शामिल है। 4 जनवरी 1984 को बिहार के गया जिले में जन्मे डॉ. उज्ज्वल ने समाचार संपादन, समन्वय और कार्यक्रम नियोजन में विशेषज्ञता के साथ मीडिया उद्योग में एक प्रभावशाली करियर बनाया है। इनकी यात्रा 2006 में पटना में प्रभात खबर में कॉपी एडिटर के रूप में शुरू हुई। इन वर्षों में, वह दैनिक जागरण, हिंदुस्तान और दैनिक भास्कर जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशनों के साथ काम करते हुए आगे बढ़े। उनकी भूमिका रिपोर्टर से लेकर वरिष्ठ उप संपादक तथा वर्तमान में सम्पादक की है। इन्होंने समाचार संपादन, रिपोर्टिंग और पेज प्लानिंग में अपने कौशल को निखारा और अपनी क्षमता को कई अवसरों पर साबित भी किया है । अपने संपादकीय कार्य के अलावा, डॉ. उज्जवल ने इग्नू में अतिथि शिक्षक के रूप में और ऑल इंडिया रेडियो के लिए एक स्क्रिप्ट लेखक के रूप में शिक्षा जगत में योगदान दिया है। दूरदर्शन के लिए संचालन एवं विशेषज्ञ के रूप में अपनी उपस्थिति कई कार्यक्रमों में दर्ज कराई है। महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र से पत्रकारिता में एम.फिल में स्वर्ण पदक और पीएच.डी. के साथ उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ भी समान रूप से उल्लेखनीय हैं। बहुसंस्करणीय हिन्दी समाचार पत्रों में स्थानीयता के प्रभाव पर ध्यान केन्द्रित करना इनकी खासियत है।

वर्तमान में पटना में रहते हुए, डॉ. उज्ज्वल संपादकीय उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना जारी है, जिसका लक्ष्य अपनी व्यापक और कुशल रिपोर्टिंग के माध्यम से विश्वास बनाना और भविष्य के आयामों को मजबूत करना है। अपने क्षेत्र के प्रति इनका समर्पण और ज्ञान की निरंतर खोज उन्हें मीडिया उद्योग में एक सम्मानित व्यक्तित्व बनाती है।

SCAN AnyScanner

आयोजन समिति

सुमन कुमार
सचिव
कला-जागरण, पटना
09431066931

वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार का नाम रंग-क्षेत्र में कोई नया नहीं है। इन्होंने स्वीकार किया है कि रंगमंच ही मेरे जीने का मकसद है। आकाशवाणी, पटना के वरीय उद्घोषक रहे श्री कुमार, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अभिनय, निर्देशक, संयोजक, कोरियोग्राफर आदि विद्या में और भी सक्रिय हो गये। अपनी अभिनय क्षमता के बल पर इन्होंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गाँधी', प्रकाश झा की फिल्म 'दामूल', भोजपुरी फिल्म 'हमार देवदास', 'लागल नथुनिया के धक्का', 'लखैरा', श्याम बेनेगल के धारावाहिक- 'डिस्कवरी ऑफ इन्डिया' से जुड़े। कला-संगम, बिहार आर्ट थियेटर के बाद सन् 1990 में कला-जागरण की स्थापना कर, कला के क्षेत्र में इनकी तीव्रता और भी बढ़ गयी। सैकड़ों नाटक में अभिनय के बाद, वे वर्तमान युवा-पीढ़ी की नाट्य-कला को निखारने में लग गये हैं। श्री कुमार बिहार आर्ट थियेटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक भी हैं। इनके निर्देशन में तैयार महत्वपूर्ण नाटक हैं-सजा, डायन, फंसरी, आउ झोपड़ी सुलग गेल, अंधा युग, कारागार, सिकन्दर-पोरस, बन्द कमरे की आत्मा, बाबू जी का पासबुक, कालसर्पिणी, गोपा, पीरअली, आदि। अपने देश की विरासत ऐतिहासिक घटनाओं को आज की युवा पीढ़ी तक सजीव बनाये रखने के उद्देश्य से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में ऐतिहासिक नाट्योत्सव सन् 2010 से प्रारम्भ करने का एक क्रांतिकारी कदम सुमन कुमार का रहा है। सन् 2011 में इस नाट्योत्सव को विस्तार देकर अखिल भारतीय स्तर का बनाया जाना इनका सराहनीय कदम माना जायेगा। सन् 2014 में बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ रंगकर्मी के लिए सम्मानित हुए। सन् 2016 में इन्हें 'प्रांगण' नाट्य संस्था की ओर से पाटलिपुत्र अवार्ड से विभूषित किया गया। सुमन कुमार (Theatre) को संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली की ओर से सन् 2022 के लिए **'अमृत सम्मान'** से 2023 में विभूषित किया गया।

डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी
सचिव
मगध कलाकार, पटना
09334525657

डॉ॰ चतुर्भुज द्वारा 1952 ई॰ में स्थापित नाट्य संस्था-'मगध कलाकार' के सचिव पद (सन् 1970 ई॰ से) को गौरवान्वित करने वाले डॉ॰ अशोक प्रियदर्शी लेखन, अभिनय, निर्देशन, पत्रकारिता आदि विद्याओं से जुड़े रहे। सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार सरकार, पटना में सेवा करते हुए इन्होंने राज्य सरकार के महत्त्वपूर्ण आयोजनों का मंच संचालन किया। विशेष रूप से पटना के गाँधी मैदान में स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस जैसे राष्ट्रीय आयोजनों में डॉ॰ प्रियदर्शी की आलंकारिक उद्घोषणा 1997 से दर्शकों के बीच चिर-परिचित बनी रही है। बिहार में नाट्य प्रदर्शन को मनोरंजन कर से मुक्त कराने में, नाटक को रोजी-रोटी से जोड़ने के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा में एम.ए. स्तर पर नाट्य शास्त्र विषय की पढ़ाई शुरू कराने में, प्रधानमंत्री बाढ़ राहत कोष, राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में राशि एकत्र कराने आदि में मगध कलाकार के सचिव की हैसियत से नाटककार डॉ॰ चतुर्भुज के कष्ट-साध्य प्रयास में डॉ. अशोक प्रियदर्शी एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी बने रहे। रेडियो, दूरदर्शन, पटना से इनके लिखे कई नाटकों का प्रसारण के साथ सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के मंच से डॉ॰ प्रियदर्शी लिखित क्रान्तिकारी सुभाष, डोमकच, खुदीराम बोस, जैसे नाटकों का मंचन किया गया। डॉ॰ चतुर्भुज के सम्पूर्ण रंगमंचीय नाटकों का संकलन तीन खंडों में चतुर्भुज रचनावली के नाम से, और डॉ॰ चतुर्भुज की आत्मकथा-'मेरी रंगयात्रा', श्यामजी सहाय लिखित 'बुजुर्गों के लिए' पुस्तकों का सम्पादन और दैनिक जागरण की ओर से बुजुर्गों के लिए प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'बागवान' में संपादकीय सहयोग प्रदान किया है। दिसम्बर, 2012 में सरकारी सेवानिवृत्ति। 2010 से डॉ॰ चतुर्भुज की स्मृति में आयोजित अखिल भारतीय ऐतिहासिक नाट्योत्सव में डॉ॰ प्रियदर्शी, वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार के सहयोगी बन कर कदम से कदम मिला कर आगे बढ़ रहे हैं। बिहार आर्ट थिएटर प्रशिक्षणालय के आमंत्रित शिक्षक डॉ. प्रियदर्शी इन दिनों मासिक पत्रिका 'राजनीति चाणक्य' और राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित 'कायस्थ पत्रिका' को लोकप्रिय बनाने में संलग्न हैं। साथ ही बुजुर्गों के लिए स्थापित नि:शुल्क सामाजिक संस्था 'पुरोधालय' के अध्यक्ष हैं। डॉ. प्रियदर्शी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर प्रणय कुमार सिन्हा ने उनके जीवन पर 'अनल्प अशोक' पुस्तक का लेखन किया जिसका लोकार्पण बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना में 15 जनवरी, 2024 को किया गया।

आयोजन समिति के सदस्य

गणेश सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा, लाला राजकुमार प्रसाद, डॉ॰ किशोर सिन्हा, रमेश सिंह, प्राणशु, जगदीश दयानिधि, कुमार कश्यप, नीलम सिंह, सुनील कुमार सिन्हा, मदन शर्मा, शिवशंकर रत्नाकर, कृष्ण मोहन प्रसाद, आदिल रशीद, रोहित कुमार, कुमार अनुपम, कुमार आर्यदेव, कन्हैया प्रसाद, नीलेश्वर मिश्रा, शीलभद्र, राजीव रंजन श्रीवास्तव, राजेश शुक्ला, फकीर मुहम्मद, किरण कुमारी, प्रेक्षा, प्रशस्ति, अनिमा, तूलिका, निधि, अनीस अंकुर, यामिनी, विजय कुमार, विशाल तिवारी, सुजीत कुमार, राजकुमार सिंह, सुमन पटेल, धर्मेश मेहता, तनुष्का राय, रीना कुमारी, साहिल सिंह, अरविन्द सिंह, सुनीता भारती, विशाखा, प्रणय कुमार सिन्हा एवं बांके बिहारी साव इत्यादि।

स्मृति शेष
डॉ. चतुर्भुज

जो तुम आ जाते एक बार

- डॉ. उषा वर्मा,
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
श्री अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

डॉ. चतुर्भुज एक ऐसा विमल-विरल व्यक्तित्व जो कभी एक दायरे में बंध कर रहा ही नहीं। पड़ाव-दर-पड़ाव उनका जीवन चक्र बचपन से लेकर अन्तिम समय तक यायावर की तरह घूमता रहा और लोगों को भारत, विशेषकर बिहार के स्वर्णिम इतिहास-साहित्य एवं बिहार की गरिमामय संस्कृति का जीवन्त दर्शन कराता रहा। अपने नाम के अर्थ-गौरव के अनुरूप बिहार की अरुणाभ कला प्रसूता, तप:साम्भवि वसुन्धरा के पुत्र डॉ. चतुर्भुज बाल्यकाल से ही प्रतिभा सम्पन्न कला-साधक मानवता के अनन्य उपासक एवं संस्कृति के चेतनशील प्रहरी तथा इतिहास के चातक मनीषि रहे। आर्यावर्त्त के स्वर्णिम काल-खंडों के पन्नों से झाँकते इतिहास एवं पुराण की महानतम विभूतियों के प्रति उनकी असीम श्रद्धा थी। छात्र जीवन से संचित एवं अनुभूत सात्विक ज्ञान को इस कला-साधक ने जनता के बीच मुक्त भाव से वितरित करने का मन बना लिया था। जीवन के आरम्भिक दौर से ही बिहार की तप: साम्भवि वसुन्धरा में विचरण करते हुए कुछ असाधारण कर गुजरने की नन्हीं सी आशा इनके अन्त:करण में बद्धमूल हो गयी थी और इतिहास के स्वर्णकाल के रत्नाभ व्यक्तित्व से बतियाने की ललक ने उन विभूतियों को जीवन्त बनाकर लोगों से रू-ब-रू कराने का संकल्प ले लिया था। डॉ. चतुर्भुज रंगमंच को अपने नाटकों से कृत-कृत्य कर सदा के लिए नेपथ्य में तो चले गये परन्तु वर्त्तमान के रंगमंच पर जैसे पुनर्जीवित होकर अपनी सम्पूर्ण रंगयात्रा को दिखाने और सुनाने के लिए स्वयं आतुर हो उठे चरित्रों के बीच जीवन्त होकर। और इतिहास के इन्हीं पन्नों के बीच से शुरू होती है इनकी जीवन यात्रा एक छोटे से कस्बाई शहर बिहार शरीफ, मुहल्ला-महल पर के साधारण परिवार में पन्द्रह जनवरी (15 जनवरी), 1928 को। तब इस बालक चतुर्भुज के परिवार वालों ने कभी यह नहीं सोचा होगा कि एक दिन यही शिशु/बालक चतुर्भुज एक महान नाटककार, अभिनेता बन कर अपने जन्म स्थान बिहार शरीफ ही नहीं बल्कि बिहार समेत पूरे भारत का मान बढ़ा कर परिवार वालों को अचम्भित कर देगा।

पिता श्री प्रयाग नारायण बख्तियारपुर (मार्टिन कम्पनी की बी. बी. लाईट रेलवे) में स्टेशन मास्टर थे। पिता नाट्यानुरागी थे। बख्तियारपुर रेलवे की नाट्य संस्था- 'बिहारी क्लब' के वे एक वरीय सदस्य थे। बिहारी क्लब द्वारा प्रदर्शित नाट्य मंचन, नाटकों की तैयारी आदि में उनका परामर्श एवं उपस्थिति अनिवार्य होती थी। पिता के साथ में अंगुली पकड़े होते थे बालक चतुर्भुज। उस समय अभिनय में महिलाएं मंच पर नहीं आती थीं। पुरुष ही महिला पात्रों की भूमिका करते थे। पिता ने तब पहली बार बालक चतुर्भुज के कमनीय और मासूम चेहरे को परख कर 'बिहारी क्लब' में मंचित नाटकों में चतुर्भुज को स्त्री पात्र की भूमिका में मंच पर उतारना शुरू किया और तब से नाटक देखते और अभिनय करते हुए इनके दिलो-दिमाग पर नाटक का एक ऐसा नशा छाया जिससे वे जीवनभर उबर नहीं पाये। तभी से इनका भोला-भाला संवेदनशील मन इतिहास के अजेय पात्रों को लेकर जाने कितने सपने देखने लगा था, खुले आसमान के नीचे खड़े होकर। इन्हीं आसमानी सपनों के साथ डॉ. चतुर्भुज बिहार की गंगा-जमुनी वसुन्धरा के गरिमापूर्ण इतिहास को धूमिल और विस्मृत होने से बचाने के लिए इतिहास को सामने लाकर भारत को बेहतर से बेहतर बनाने का सपना देख रहे थे। किशोर चतुर्भुज उम्र के साथ-साथ नाटक से भी अन्त:करण से जुड़ने लगे थे और समझने लगे थे कि इतिहास एवं संस्कृति को चिरंजीवी बनाये रखने के लिए रंगमंच से सशक्त माध्यम और कुछ नहीं। नाट्याकर्षण का बीज-वपन तो उनके हृदय में बालपन से ही पिता जैसे नाट्यानुरागी रंगकर्मी ने भर दिया था जो ताउम्र नहीं छूटा। इतिहास-पुराण के पन्नों से चुन-चुन कर एक से एक अजेय पात्रों की कथा को रंगमंच पर जीवन्त और अमर करते चले गये डॉ. चतुर्भुज।

डॉ. चतुर्भुज जैसे महान रंग निर्देशक, नाटककार, अभिनेता की रंगयात्रा जितनी अतुलनीय, महान और लोकप्रिय थी उनकी जीवन यात्रा उतनी ही संघर्षपूर्ण एवं अभावग्रस्त थी। घर की अभावग्रस्त स्थिति को थोड़ी राहत देने के लिए सातवीं कक्षा का छात्र चतुर्भुज ने अपने नीचे की कक्षा के छात्रों को पढ़ाना शुरू किया। किशोर चतुर्भुज के हृदय में घर के प्रति जिम्मेदारी का उफान देख कर परिवार वालों की आंखें नम हो गयी थी। ऐसा ही नमनीय व्यक्तित्व था बचपन से ही डॉ. चतुर्भुज का। डॉ. चतुर्भुज के भीतर के संस्कार ने इतनी छोटी उम्र में उन्हें अपनी जिम्मेदारी का इतना बड़ा एहसास दिला देगा, इसे घर वालों ने सपने में भी नहीं सोचा था।

SCAN AnyScanner

मानवीय संवेदना और संस्कार इनके रक्त में था। खेलने और खाने की उम्र में घर के अर्थाभाव को समझना बहुत बड़ी बात थी। मैट्रिक की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने के बावजूद अर्थाभाव के कारण वे कॉलेज में दाखिला नहीं ले सके और स्वतन्त्र रूप से आगे की पढ़ाई पूरी की।

अपने और अपने परिवार के जीवन-यापन के लिए डॉ. चतुर्भुज ने कई छोटी-मोटी नौकरियाँ की। इसी क्रम में उन्हें खुशरूपुर (पटना) के एक उच्च विद्यालय में शिक्षक की अस्थायी नौकरी भी मिली। इसके पश्चात् बख्तियारपुर-राजगीर मार्टिन कम्पनी की छोटी लाइन रेलवे की नौकरी उन्हें स्थायी तौर पर मिल गयी। रेलवे की नौकरी करते हुए उनकी मुलाकात अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बौद्ध भिक्षु श्री जगदीश कश्यप से हुई। उनके मार्ग दर्शन में डॉ. चतुर्भुज ने बौद्ध साहित्य तथा पालि में एम.ए. की परीक्षा पास की। नालन्दा में रहते हुए डॉ. चतुर्भुज ने त्रिपिटक सम्पादन विभाग में चार साल तक पालि ग्रंथों का देवनागरी में अनुवाद तथा सम्पादन का कार्य किया और बौद्ध विषयक अनेक नाटक लिखे।

नाटक के प्रति डॉ. चतुर्भुज का ऐसा दिवानापन था कि इन्होंने रेलवे की नौकरी छोड़ दी और हिन्दी में नाटकों का अभाव देखते हुए अभिनय के साथ नाट्य लेखन में जुड़ गये। बिहारी क्लब के बाद 1952 ई. में उन्होंने ''मगध आर्टिस्ट्स'' अर्थात मगध कलाकार की स्थापना की। डॉ. चतुर्भुज का मुख्य उद्देश्य था हिन्दी में नाटक लेखन और मंचन द्वारा हिन्दी नाट्य जगत को धन्य करना। हिन्दी क्षेत्र ने इनके नाटकों की लोकप्रियता देख कर इन्हें बार-बार सम्मानित किया। इसी क्रम में 1956 में मगध कलाकार मंच पर इन्होंने 'कलिंग विजय' का सफल प्रदर्शन किया जिसे देखने फिल्म जगत के सुप्रसिद्ध रंगकर्मी एवं अभिनेता पृथ्वीराज कपूर बख्तियारपुर तक पहुँच गये। नाटक प्रदर्शन से वे इतने प्रभावित हुए कि प्रदर्शन को व्यावसायिक रूप में स्थापित करने की उन्होंने सलाह दे दी। फलस्वरूप बख्तियारपुर से कुछ किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित, बाढ़ अनुमंडल में स्थित नीलम पिक्चर पैलेस सिनेमागृह में टिकट पर नाटकों का प्रदर्शन तीन-चार माह तक सफलतापूर्वक होता रहा। दर्शकों को आकर्षित करने के लिए संस्था द्वारा बनारस की नौटंकी कम्पनी को भी आमंत्रित किया जाता था। लेकिन कई विसंगतियों के कारण नियमित व्यावसायिक प्रदर्शन रुक गया। बम्बई लौटने पर भी पृथ्वीराज कपूर स्नेहिल पत्रों के द्वारा व्यावसायिक रंगमंच को जारी रखने का प्रोत्साहन देते रहे। प्रोत्साहन उन्हें दिशा दे रहा था। फलतः कुँवर सिंह, बहादुरशाह, पीरअली तथा झांसी की रानी नाटकों का प्रदर्शन कर डॉ. चतुर्भुज ने सर्व-धर्म समन्वय तथा हिन्दु-मुस्लिम एकता दर्शाया और उन्होंने मानवता के क्षेत्र में एक नयी मिसाल कायम की। डॉ. चतुर्भुज की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि शहरी क्षेत्र से लेकर गाँव के कोने-कोने तक इनके नाटकों के सफल प्रदर्शन होते रहे। मगध कलाकार की प्रेरणा से कई नयी संस्थाओं का जन्म बख्तियारपुर के आस-पास के क्षेत्र में हुए। विभिन्न संस्थाओं की ओर से डॉ. चतुर्भुज के नाटकों के प्रदर्शन से हिन्दी नाट्यान्दोलन को एक नयी दिशा मिलती रही। इस तरह वे रंगमंच, रेडियो, दूरदर्शन के सर्वाधिक सफल नाटककार, निर्देशक और अभिनेता सिद्ध हुए। इनकी प्रसिद्धि, प्रतिभा एवं लोकप्रियता देखकर एक बार शब्द शिल्पी राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने कहा था- ''आपको जानते-जानते जानेंगे लोग, फिर ऐसा जानेंगे कि जाने नहीं देंगे।''

नाटककार होने के साथ-साथ डॉ. चतुर्भुज सच्चे अर्थों में मानव थे। जनहित की भावना से संवेदित इनका मन पीड़ितों, जरूरतमंदों तथा पिछड़े लोगों के लिए दानवीर कर्ण की तरह हर पल, हर जगह खड़ा रहा। यही भावना थी कि अपने कलाकारों को वे पारिश्रमिक भी दिल खोल कर देते रहे। पैसे की ललक इन्हें जरा भी नहीं थी। अपने नाट्य प्रदर्शन के माध्यम से अर्जित धन राशि मुक्त भाव से राष्ट्रीय सुरक्षा कोष, प्रधानमंत्री राहत कोष, मुख्यमंत्री बाढ़ राहत कोष, सुखाड़ कोष, जमुई स्टेडियम निर्माण कोष, दानापुर महिला महाविद्यालय कोष, श्री चन्द उदासीन कॉलेज, हिलसा आदि के लिए यथा साध्य धन दान करते रहे। स्वयं अभाव में रहकर भी पुनीत कार्य करना इनका जीवन धर्म बन गया था।

यों तो भारत-पाक विभाजन के पूर्व से ही डॉ. चतुर्भुज पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे थे। नाटक के क्षेत्र से इतर भी इनकी लेखनी-सशक्त रूप से चलती रही। बौद्ध साहित्य पर आधारित उनके नाटक रहे हैं'- पाटलिपुत्र का राजकुमार, प्रसेनजीत, नेत्रदान, मिलिन्दप्रश्न आदि। इसके अतिरिक्त भारत के बौद्ध महाविहार कोष ग्रंथ काफी महत्वपूर्ण हैं। डॉ. चतुर्भुज के नाटकों की लोकप्रियता इस बात से सिद्ध हो जाती है कि उनके कई नाटकों का अंग्रेजी, मैथिली और तमिल भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं और उन नाटकों का मंचन पटना के सुधि दर्शकों के समक्ष होते रहे हैं।

डॉ. चतुर्भुज रंगकर्मियों के बीच सदैव 'गुरु जी' के नाम से सम्बोधित होते रहे। इसका मुख्य कारण यही था कि वे हमेशा रंगकर्मियों को मार्गदर्शन देते रहे। वैसे मगध विश्वविद्यालय से स्वीकृत डॉ. सच्चिदान्नद सिन्हा पत्रकारिता एवं जन संचार संस्थान और आई.आई.बी.एम. संस्थान में पत्रकारिता विषय से उनका जुड़ाव कई वर्षों तक बना रहा और वे वहाँ पत्रकारिता विषय के शिक्षक रहे।

RBI License -. RPCD.DCCB/PAT-24/2011-12 date 31 May 2012

आपका बैंक अपना बैंक

सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि. आरा

तपेश्वर भवन, मंगल पांडेय पथ, आरा, भोजपुर

- सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि. आरा बिहार सहकारिता अधिनियम 1935 के तहत निर्बंधित सहकारी समिति है।
- बैंक की वित्तीय उपलब्धियाँ

विवरणी	वर्ष 2024	वर्ष 2023	वर्ष 2022
हिस्सा पूँजी	1741.13	1715.06	1322.21
सुरक्षित कोष	1747.95	1625.32	1599.70
जमा	53045.43	51384.88	43400.01
विनिवेश	12551.15	13610.01	35674.00
ऋण एवं अग्रिम	23097.37	57176.44	39878.78
लाभ	212.81	61.89	106.29

अन्य सुविधाएँ:-

- ★ सभी शाखाएँ पूर्णतः कोर बैंकिंग
- ★ RTGS/NEFT/SMS/POS/ATM cum DEBIT CARD/CTS/NACH/DBTL/PFMS/Daily Deposit-
- ★ 24 घंटे ATM, Mobile ATM Van से बैंकिंग सुविधाएं।
- ★ सभी जमा खाताओं पर आकर्षक ब्याज
- ★ सभी प्रकार के ऋण (KCC/HOUSING/PERSONAL/OD/VEHICLE etc) की सुविधा उपलब्ध
- ★ QR code के माध्यम से भुगतान की सुविधा
- ★ बैंक द्वारा E-Stamp/E-Court की सुविधा उपलब्ध

अन्य विभिन्न योजनाएं

- प्रधानमंत्री जन-धन योजना
- अटल पेंशन योजना

मो. शाहनवाज आलम
प्रबंध निदेशक

सत्येंद्र नारायण सिंह
माननीय अध्यक्ष

सहकार से समृद्धि
आत्मनिर्भर भारत, आत्मनिर्भर कृषि
IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

इफको नैनो यूरिया प्लस
और
इफको नैनो डी ए पी
का वादा
उपज अधिक और लाभ ज्यादा
इफको द्वारा विश्व के पहले नैनो उर्वरक

500 मिली बोतल मात्र ₹ 225/- में
500 मिली बोतल मात्र ₹ 600/-में
मुफ्त दुर्घटना बीमा

इफको नैनो यूरिया प्लस (तरल)
इफको नैनो डी ए पी (तरल)

IFFCO
INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones: 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website: www.iffco.coop

Amar Jyoti Kia Sales- Pandey Plaza, Exhibition Road, Patna - 800001, T 9606970220
Service 1 - Kurji More, Towards Ganga River, Patna - 800010, T 8102922004, 08047092002
Service 2 - Bhootnath Road, Kankarbagh, Patna - 800026, T 8102922003, 08047092002

SCAN AnyScanner

श्री वात्सल्य मिश्रा
प्रबंध निदेशक

श्री रितेश कुमार
माननीय अध्यक्ष

पाटलिपुत्र सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि०

बैंक में चालू योजनायें

- पाटलिपुत्र धन-वर्षा योजना
- KCC 100% सूद माफ़ी योजना
  (7 साल या उससे अधिक समय से NPA की 100% सूद माफ़ी)
- DMA
- M-Swasth
- Atal Pension Yojna
- PMSBY
- PMJJBY

संयुक्त देयता समूह (JLG)

कन्या समृद्धि योजना

DDS

KCC कार्ड

दिल्ली में आयोजित गणतन्त्र दिवस के अवसर पर सन् 1957 में डॉ. चतुर्भुज ने अपनी संस्था के कलाकारों के साथ बीस विदेशी बौद्ध भिक्षुओं को लेकर बिहार का प्रतिनिधित्व किया। मौका था उक्त अवसर पर प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय की झांकी प्रस्तुत करने का। डॉ. चतुर्भुज के नेतृत्व में बिहार प्रदेश की प्रस्तुत झांकी प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय से लोग इतने प्रभावित हुए कि देश के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, लेडी माउन्टबेटन, श्रीमती इन्दिरा गाँधी जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संग उनके आवास पर डॉ. चतुर्भुज और उनके सहयोगी बौद्ध भिक्षुओं और कलाकारों को भोजन करने के लिए आमंत्रित किया गया। सन् 1957 का वह अभुतपूर्व अनुभव था कि 1979 में पटना के तत्कालीन जिलाधीश के सादर अनुरोध पर डॉ. चतुर्भुज ने पटना में गणतंत्र दिवस के अवसर पर रंग-बिरंगी झांकियाँ प्रस्तुत करने का दायित्व लिया और इसका खाका तैयार किया। 1979 में पहली बार इनके सहयोग से पांच-छ: झांकियाँ पटना में प्रस्तुत की गयीं। मगध कलाकार की ओर से प्रस्तुत झांकी थी- अंग्रेजों की गोली से घायल जगदीशपुर के बाबू कुँवर सिंह द्वारा अपनी भुजा माँ गंगा को भेंट करना। गणतंत्र दिवस के अवसर पर झांकियों के प्रदर्शन की वही परम्परा आज तक कायम है।

डॉ. चतुर्भुज की सोच सदैव सामाजिक सरोकार से रही। इसी कारण उन्होंने अपने नाटकों में कई प्रयोग किए जिनमें साझी सांस्कृतिक एकता की मिसाल देखने को मिलती है। उत्तर-दक्षिण सांस्कृतिक एकता पर आधारित नाटक 'रावण' इसका एक उदाहरण माना जा सकता है। इस नाटक की विशेषता रही है राम-रावण में मानवीय गुणों का। इस नाटक की लोकप्रियता ऐसी रही कि पटना के कालिदास रंगालय में इस नाटक का सफल मंचन लगातार तीन महीने तक होता रहा। इसी प्रकार 'कंस वध' नाटक में काली सरदार कालियानाग का मानवी रूप लेकर प्रस्तुत किया गया है। नाटक को रसरंजक बनाने के उद्देश्य से उन्होंने अपने नाटकों में कुछ काल्पनिक पात्रों का भी सृजन किया है, लेकिन मौलिकता पर आँच नहीं आने दिया। यथा-अरावली का शेर में इतिहास कथा के साथ अकबर और प्रताप की भेंट, मीरकासिम में युद्ध क्षेत्र में मीरकासिम की मृत्यु, सिराजुद्दौला में क्लाइव और सिराजुद्दौला की भेंट, रावण में शूर्पनखा का रावण से विद्रोह, मेघनाद में सीता और सुलोचना का मिलन, रावण में कलियुग में असली युद्ध का रावण का संकल्प आदि, जो युग सापेक्ष एवं प्रासंगिक सिद्ध हुआ। डॉ. चतुर्भुज एक ऐसे नाटककार रहे हैं जिन्होंने अपने नाटकों में अंग्रेजी, फ्रेंच, इटैलियन, चीनी, ग्रीक जैसे विदेशी चरित्रों को लाया है। इनके संवाद लिखने के लिए उन्होंने संबन्धित विदेशी दूतावास से मदद ली। इन विदेशी चरित्रों के संवाद ऐसे बने जिन्हें आज उच्च वर्ग के लोग भी उतने ही चाव से बोलते हैं और समझते हैं जितने निम्न वर्ग या समुदाय के लोग बोलते या समझते हैं।

जहाँ तक प्रदर्शन की सफलता और लोकप्रियता का प्रश्न है- 1957 से लेकर आज तक डॉ. चतुर्भुज के नाटकों का प्रदर्शन प्रशंसा एवं सम्मान बटोरता रहा। इनके कार्यक्षेत्र का अन्तिम पड़ाव था दरभंगा आकाशवाणी, जहाँ वे केन्द्र निदेशक के पद को सुशोभित कर सरकारी सेवा से 1986 ई. में सेवा-निवृत्त हुए। सरकारी सेवा करते हुए उनकी लेखनी रेडियो, दूरदर्शन, रंगमंच के लिए चलती रही। ऊँचे पद पर रहते हुए अपने संयत और मधुर स्वभाव के बल पर उन्होंने मिथिलावासियों को अपनी ओर आकर्षित किया। नाटक और रंगमंच को रोजी-रोटी से जोड़ने के उद्देश्य से उन्होंने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के तत्कालीन कुलपति के अनुरोध पर नाट्यशास्त्र की पढ़ाई स्नातकोत्तर स्तर पर प्रारम्भ करायी और वहाँ वे प्रथम शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। कालान्तर में नाट्यशास्त्र की पढ़ाई इन्टरमीडिएट स्तर पर भी शुरू कराई। इन कार्यों से उन्हें आत्म परितोष तो मिला ही, मिथिला विश्वविद्यालय और इन्टरमीडिएट शिक्षा परिषद् धन्य हो गया। अध्ययन और अध्यापन के डॉ. चतुर्भुज इतने दीवाने रहे कि सेवा निवृत्ति के दस वर्षों के बाद उन्होंने पी-एच.डी. की उपाधि मगध विश्वविद्यालय से प्राप्त की, जबकि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर दूसरे विश्वविद्यालय से दूसरे शोधार्थी पूर्व में शोध कर एम.फिल और डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त कर चुके थे।

क्लैसिक संस्कृत नाटकों में से कालिदास लिखित अभिज्ञान शाकुन्तलम् और विशाखदत्त लिखित नाटक मुद्राराक्षसम् का रंगमंचीय रूपान्तर कर डॉ. चतुर्भुज ने एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। शकुन्तला और मुद्राराक्षस नाटकों के संबन्ध में वे कहते हैं कि रूपान्तरण में मैंने पात्रों को संक्षिप्त किया, संवाद को आज के अनुरूप बनाया, दृश्यों की कठिनाई को दूर किया आदि। अगर यह नाटक मंचन में सफल हुआ, तब इसका श्रेय श्री कालिदास और श्री विशाखदत्त को जाता है, और अगर यह असफल हुआ तब इसके लिए पूरी तरह दोषी मैं हूँ। केन्द्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय की ओर से डॉ. चतुर्भुज को दो बार सीनियर फेलोशिप प्रदान किया गया। पहली बार उन्होंने भारतीय और विदेशी नाटकों के इतिहास पर कार्य किया, जिसका प्रकाशन कालान्तर में किया गया। दूसरी दफा वे जुटे थे- रंगमंच के व्यवहारिक पक्ष पर पुस्तक तैयार करने के लिए - 'नाट्य-शिल्प-विज्ञान' के लेखन कार्य में, जो अधूरा ही रह गया। जीवन के अन्तिम समय तक उनकी लेखनी की स्याही नहीं सूखी, न ही उनका मन थका, निरंतर उनकी लेखनी सरपट दौड़ती ही रही। इसके अलावा 'औरंगजेब,' मेमोआयर्स ऑफ विलियम टेलर',

हिस्ट्री ऑफ द ग्रेट मुगल्स, इतिहास बोल उठा जैसे महत्वपूर्ण पुस्तकों के साथ उन्होंने तीन ऐतिहासिक उपन्यास- समुद्र का पक्षी, राजदर्शन और तथागत जैसी महत्वपूर्ण पुस्तकें पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की है। डॉ. चतुर्भुज के लगभग चालीस रंगमंचीय और रेडियो नाटकों का प्रकाशन तीन खंडों में समय प्रकाशन, नई दिल्ली से किया गया है। इनमें उनके नाटकों के साथ-महत्वपूर्ण कहानियाँ, खोजपूर्ण लेख, और संस्मरणों को भी समेटा गया है। उपन्यास एवं भारतीय और विदेशी नाटकों का इतिहास जैसे महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन भी यहीं से किया गया है।

डॉ. चतुर्भुज के उल्लेखनीय कार्यो को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से इनका उल्लेख भारतीय हिन्दी जगत के समृद्ध संदर्भ ग्रंथों में किया गया है। प्रमुख संदर्भ ग्रंथ हैं- साहित्य अकादमी के 'हू इज हू', दशरथ ओझा के 'हिन्दी नाटक कोष में, डिस्टिंग्यूइस्ड यूथ ऑफ इण्डिया 'हूज हू' (पृष्ठ 146) में, 'बायोग्राफी इन्टरनेशनल' में, 'एशिया पेसेफिक हूज हू' में, 'एशियन अमेरिकन हूज हू' में, 'लर्नेड एशिया' में, रेफरेन्स एशिया आदि। हजारों विद्वानों के बीच उनका प्रशंसित उल्लेख महनीय है।

नाटककार डॉ. चतुर्भुज की झोली में रंगमंच और जीवन के अनेक खट्टे-मीठे अनुभव पड़े थे। वे चाहते थे उनके रंगमंचीय अनुभवों के खट्टे-मीठे अनुभवों से आज की युवा-पीढ़ी भी लाभान्वित हों। इसी उद्देश्य से उन्होंने 1996 ई. से अपने अनुभवों को लिपिबद्ध करना शुरू किया। सन् 2009 में जब उन्होंने एक सरसरी निगाह अपनी आत्मकथा पर डाली तब खामोश हो गये। सोचने लगे कि इस रंगयात्रा रूपी आत्मकथा में तो अभी बहुत सारी घटनाएं शेष रह गयी हैं। मौका निकाल कर उन्हें भी लिपिबद्ध कर ही लूँगा। लेकिन कठपुतली की डोर तो ऊपर वाले के हाथ केन्द्रित थी। अकस्मात लाईट ऑफ हुआ और ऐतिहासिक नाटकों का परदा गिर गया। डॉ. चतुर्भुज की आत्मा वर्तमान शरीर का परिधान उतार कर दूसरे नाटक का परिधान धारण करने ग्रीन रूम में चला गया था। वह मनहूस दिन था- 11 अगस्त 2009 ई.। महान नाटककार, अभिनेता, निर्देशक, विनम्र व्यक्ति, स्नेहिल मित्र डॉ. चतुर्भुज पंचतत्व में मिल कर विलीन हो गये। लेकिन उनकी वह अमर रचना उनके मरणोपरान्त समय प्रकाशन ने 'मेरी रंगयात्रा' पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

पूर्व में नाटक का टिकट बेचना और नाट्य प्रदर्शन से पूर्व जिला प्रशासन से अनुमति प्राप्त करना कठिन था। मनोरंजन कर लगते थे और जिला प्रशासन से अनुमति प्राप्त करना छोटे रंगकर्मियों के लिए एक टेढ़ी खीर होती थी। अव्यावसायिक नाट्य संस्था, अलग-अलग रंग के कार्ड छपवा कर लोगों से डोनेशन लेती थी और नाटक का खर्च वहन करते थे। प्रदर्शन की अनुमति लेने के लिए एक व्यक्ति को खासकर लगाया जाता था। बाबुओं की खुशामद में समय की बर्बादी होती थी। नाटककार डॉ. चतुर्भुज तो पारसी थियेटर युग से ही नाटकों से जुड़े थे। रंगकर्मियों द्वारा नाटकों के लिए टैक्स चुकाना उनके लिए एक टीस के समान थी। तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर डॉ. चतुर्भुज की रंगगतिविधियों से पूर्व परिचित थे। चाय पीने के क्रम में जब कर्पूरी जी ने नाट्य लेखन और प्रदर्शन के संबन्ध में डॉ. चतुर्भुज से बातें की और जाना कि मनोरंजन कर के कारण अब नाटक कर पाना कठिन है तो नाटक प्रेमी कर्पूरी जी हतप्रभ हो गये। उन्होंने चतुर्भुज जी से पैड पर एक आवेदन पत्र लिखवाया और उसी दिन कैबिनेट में उसे प्रस्तुत कर, नाटक पर से मनोरंजन कर को समाप्त कर दिया। नाटक पर से मनोरंजन कर समाप्त कराना डॉ. चतुर्भुज की अतुलनीय देन मानी जायेगी।

मीरकासिम नाटक पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात डॉ. चतुर्भुज को राजस्थान सरकार, भारत सरकार के संस्कृति विभाग, राजभाषा विभाग, बिहार सरकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् आदि की ओर से पुस्तक प्रकाशन के लिए अनुदान राशि प्रदान की गयी। बिहार सरकार के अलावा उन्हें कई अराजकीय संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित भी किया गया।

महान विभूति कभी मरते नहीं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व उन्हें अमर बनाये रखता है। डॉ. चतुर्भुज ने 11 अगस्त, 2009 के दिन तक किसी एक नाटक में एक चरित्र का अभिनय किया था। अपने पूरे अभिनय के दौरान उनकी लेखनी, समाज के प्रति उनके कर्तव्य, रंगकर्म के प्रति उस महान विभूति का समर्पण, स्नेहिल व्यक्तित्व आदि उन्हें अमर बनाए रखा है। नाट्य जगत को समृद्ध और सशक्त बनाने का एक मशाल दे दिया है डॉ. चतुर्भुज ने आज के रंगकर्मियों के हाथ में। हिन्दी नाट्य आन्दोलन सदैव गतिशील रहेगा। डॉ. चतुर्भुज हमारे बीच एक जाग्रत रंगकर्मी-नाटककार की तरह हमारे आगे चलते रहे हैं, और आगे भी चलते रहेंगे। डॉ. चतुर्भुज जैसे महान चितेरा को बिहारी जन का शत-शत प्रणाम करते हुए बस इतनी ही श्रद्धा निवेदन है कि आने वाले को जाना होगा। मैं कवि दुष्यन्त की चंद पंक्तियों के साथ उन्हें सादर नमन करती हूँ-

हौले-हौले पाँव हिलाओ, जग सोया है छेड़ो मत,
हम सब अपने-अपने दीपक यहीं सिराने आयेंगे।

●

पाटलिपुत्र का राजकुमार

लेखक
डॉ. चतुर्भुज

20 फरवरी, 2025 (गुरुवार)

परिकल्पक /निर्देशक
सुमन कुमार

प्रस्तुति- कला जागरण, पटना

निर्देशक- वरिष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार का नाम रंग-क्षेत्र में कोई नया नहीं है। इन्होंने स्वीकार किया है कि रंगमंच ही मेरे जीवन का मकसद है। आकाशवाणी, पटना के वरीय उद्घोषक रहे श्री कुमार, सरकारी सेवा से निवृत्त होने के बाद अभिनय, निर्देशक, संयोजक, कोरियोग्राफर आदि विधा में और भी सक्रिय हो गये। अपनी अभिनय क्षमता के बल पर इन्होंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म 'गाँधी', प्रकाश झा की फिल्म दामूल, भोजपुरी फिल्म 'नथुनिया के धक्का, लखैरा, श्याम बेनेगल के धारावाहिक 'डिसकवरी ऑफ इंडिया' से जुड़े। कला-संगम, बिहार आर्ट थियेटर के बाद सन् 1990 में कला-जागरण की स्थापना कर कला के क्षेत्र में इनकी तीव्रता और भी बढ़ गयी। सैकड़ों नाटकों में अभिनय के बाद वे वर्तमान युवा पीढ़ी की नाट्य कला को निखारने में लग गये हैं। सन् 2014 में बिहार सरकार द्वारा वरिष्ठ रंगकर्मी के लिए सम्मानित हुए। सन् 2016 में इन्हें प्रांगण नाट्य संस्था की ओर से पाटलिपुत्र अवार्ड से विभूषित किया गया। कला-जागरण के सचिव श्री सुमन कुमार (थियेटर) संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली की ओर से सन् 2022 के लिए 'अमृत सम्मान' से विभूषित किया गया।

कथासार

पालि-ग्रंथ 'महावंश' के अनुसार बिन्दुसार के पुत्रों में सबसे अधिक पुण्य, तेज, बल और बुद्धि वाले अशोक थे। वह एकछत्र राज्य करना चाहते थे और चार वर्षों के बाद उन्होंने पाटलिपुत्र में अपना अभिषेक कराया। कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक बौद्ध हो गये थे। फाहियान, ह्वेनसांग, इत्सिंग आदि चीनी यात्रियों ने सम्राट अशोक को बौद्ध कहा है। सम्राट् अशोक की पाँच रानियों का उल्लेख मिलता है। प्रथम पत्नी देवी के गर्भ से ही राजकुमार महेन्द्र और राजकुमारी संघमित्रा का जन्म हुआ था। कुणाल की जननी पद्मावती थी। बौद्ध साहित्य 'दिव्यावदान' का एक अध्याय है कुणालावदान। इस नाटक की कथा मूलत: कुणालावदान पर आधारित है। कुणाल के जन्म के पश्चात् सम्राट अशोक ने उसका नाम धर्म विवर्धन रखा। पुत्र की आंखें बड़ी सुन्दर थीं। मंत्रियों ने कहा-महाराज ऐसी आंखें मनुष्य की नहीं होती। हिमेन्द्रराज पर्वत के शृंग पर निवास करने वाले अपार जलराशि में उत्पन्न प्रवाल पुष्प के समान कुणाल नाम के एक पक्षी की आंखें ऐसी होती है।

एक दिन सम्राट् अशोक, राजकुमार कुणाल के साथ यश नाम के अर्हत से मिलने के लिए कुक्कुटाराम गये। यश ने कुमार को कहा- ''कुमार, चक्षु को अनित्य जानो। ये नेत्र सहस्त्रों दुखों के कारण हैं।'' कुणाल की पत्नी का नाम कांचनमाला था। जब तक्षशिला में विद्रोह हुआ तो उसके दमन हेतु राजकुमार कुणाल को भेजा गया। विद्रोह का दमन हो गया। इसी बीच सम्राट अशोक बीमार पड़े। रानी तिष्यरक्षिता ने सम्राट् की बड़ी सेवा की और पुरस्कार में एक सप्ताह तक राज्य करने की अनुमति पायी। इसी बीच तिष्यरक्षिता ने कुणाल को नेत्रहीन करने की आज्ञा तक्षशिला भेज दी। कुणाल को नेत्रहीन कर दिया गया।

काफी दिनों बाद नेत्रहीन राजकुमार कुणाल भटकते हुए पाटलिपुत्र आया जहाँ पिता-पुत्र का मिलन हुआ। बौद्ध ग्रंथ दिव्यावदान से ही ज्ञात होता है कि पूर्व जन्म में कुणाल ने पाँच सौ मृग का शिकार कर उनके नेत्र निकलवा लिये थे, उसी का विपाक उन्हें इस जन्म में भोगना पड़ा। कहा जाता है कि तिष्यरक्षिता ने ईर्ष्यावश कुणाल के नेत्र नष्ट कराये। लेकिन वह उसकी हत्या भी तो करवा सकती थी। नेत्रहीन कराने से भेद खुलने का भी भय था। फिर भी इतिहास को मर्यादित रखते हुए लेखक ने इस नाटक में घटनाएं वही रखी है। राजकुमार कुणाल की आंखें जाती है। तिष्यरक्षिता पर लांक्षण भी लगता है। लेकिन दोषी वह नहीं। आखिर राजकुमार कुणाल को नेत्रहीन करने का दोषी कौन है? इसकी जानकारी तो नाटक देखने के पश्चात ही हो पायगा।

SCAN AnyScanner

पात्र-परिचय

मंच पर-

अशोक	-	सौरभ सिंह
कुणाल	-	कुमार सौरभ
तिषरक्षित	-	अपराजिता कुमारी
कालसेन	-	नन्दन लाल सिंह
नायक	-	चन्दन राय
विशालाक्ष	-	मिथिलेश कुमार सिन्हा
कांचनमाला	-	मुस्कान कुमारी
प्रतिहारी-1	-	प्रिंस राज
प्रतिहारी-2	-	अरविन्द कुमार
प्रतिहारी-3	-	राजन मण्डल
प्रतिहारी-4	-	नागेन्द्र कुमार
सैनिक	-	चंदन उगना

मंच परे-

संगीत परिकल्पना	-	राहुल राज
प्रकाश परिकल्पना	-	उपेन्द्र कुमार/राजीव राय
ध्वनि नियंत्रण	-	मनीष कुमार
रूप सज्जा	-	अंजू कुमारी
वस्त्र विन्यास	-	यामिनी
वस्त्र प्रबंधन	-	रीना कुमारी
मंच निर्माण	-	सुनील कुमार
मंच सज्जा	-	प्रकाश/धनराज
प्रस्तुति समन्वय	-	चंद्रावती कुमारी, रणविजय सिंह, अजीत गुज्जर, शैलेन्द्र कुमार
मंच संचालन	-	श्रीकांत
प्रस्तुतति प्रभारी	-	रोहित कुमार
मार्गदर्शन	-	गणेश प्रसाद सिन्हा, अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा
नाट्यकार	-	डॉ. चतुर्भुज
परिकल्पना एवं निर्देशन	-	सुमन कुमार
सौजन्य	-	कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार
आभार	-	मगध कलाकार, बिहार संगीत नाटक अकादमी, नीलेश्वर मिश्रा, डॉ. किशोर सिन्हा, कन्हैया प्रसाद तथा रंग एवं मीडिया जगत के सभी सदस्य।

दिनांक- 20 फरवरी **संध्या- 5.30** **नुक्कड़ नाटक- 'तुमको का बताईं भइया'** **लेखक-** अभिषेक चौहान **निर्देशक-** मो. जानी **प्रस्तुति-** नाद	**दिनांक- 21 फरवरी** **संध्या- 5.30** **नुक्कड़ नाटक- 'दो कलाकार'** **लेखक-** भगवती चरण शर्मा **निर्देशक-** प्रिंस राज **प्रस्तुति-** कला जागरण, पटना
दिनांक- 20 फरवरी **नुक्कड़ नाटक- 'सिक्योरिटी गार्ड की बहाली'** **लेखक/निर्देशक-** कुमार उदय सिंह **प्रस्तुति-** रंग समूह	**दिनांक- 22 फरवरी** **नुक्कड़ नाटक- 'जीवन है अनमोल'** **लेखक- बुल्लू कुमार** **निर्देशक-** सुमन कुमार **प्रस्तुति-** कला जागरण, पटना

क्रांतिकारी जुब्बा भाई

लेखक
श्याम कुमार सहनी

21 फरवरी, 2025 (शुक्रवार)

प्रस्तुति- कलर व्हील, दरभंगा

परिकल्पक /निर्देशक
श्याम कुमार सहनी
ऋषिकेश कुमार

लेखक-निर्देशक : श्याम कुमार सहनी- बचपन से चित्रकला और मूर्तिकला में रुचि रखने वाले श्याम कुमार सहनी की नाट्ययात्रा दरभंगा की 'थिएटर यूनिट' से हुई। फिर आकाशगंगा रंग चौपाल एसोसिएशन, बरौनी से जुड़े। वर्ष 2014 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से परिकल्पना एवं निर्देशन में विशेषज्ञ हुए। अंधा युग, अंधेर नगरी, बिन दुल्हन की शादी, अभिनव जयदेव, विद्यापति, वितस्ता आदि प्रमुख नाटकों में अभिनय किया। पापा खो गये, बस आकर चले जाना, रुस्तम-सोहराब, रिफंड, वीकेंड, A Middle Class Dog, Oxman, रसप्रिया, अमर शहीद जुब्बा भाई, रानी और पिटू आदि नाटकों का निर्देशन किया। डिजायनर के रूप में आपने ख्यातिप्राप्त रंगकर्मी अनुराधा कपूर, कीर्ति जैन, रंजीत कपूर, रोबिन दास, देवेन्द्रराज अंकुर, अभिलाष पिल्लै, शान्तनु बोस, के.एस. राजेन्द्रन, त्रिपुरारी शर्मा, दिनेश खन्ना, पिटर कुक (अमेरिका), क्लौडिया मेयर (लंदन), नील फ्रेंजर (लंदन) पद्मश्री विदुषी रीता गांगुली आदि के साथ कार्य करने का अनुभव। 2015 में सिंगापुर में आयोजित 8th Asia-Pacific Bureau Theater School Festival में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की ओर से प्रो. सुरेश शेट्टी के निर्देशन में नाटक 'साइलेंट स्पीच' में बतौर अभिनेता, नर्तक और डिजाइनर के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्याम कुमार सहनी लिखित महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं- तुम हमें खाओ-हम तुम्हें खायेंगे, महंगाई डायन खाए जात है (नुक्कड़ नाटक), बेवकूफ भूत, ऑक्समैन, जीरो वाटर, अमर शहीद जुब्बा भाई आदि। बच्चों को नाटक, शिल्प एवं चित्रकला में प्रशिक्षित कर आपने बिहार सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में एक विशेष उदाहरण पेश किया है। थियेटर के प्रति समर्पण के लिए आपको 'थियेटर वाला युवा सम्मान 2016', 'बिहार गौरव सम्मान 2018' एवं 'डॉ. सी.एम. झा सम्मान 2023' प्रदान किया गया है। इन दिनों श्याम कुमार सहनी को कला संस्कृति एवं युवा विभाग के अन्तर्गत जिला कला एवं संस्कृति पदाधिकारी के रूप में बेगूसराय में पदस्थापित किया गया है। बेगूसराय जिला के कला एवं कलाकारों के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए वे मुस्तैद हैं।

ऋषिकेश कुमार- सन् 2004 से रंगमंच से जुड़कर श्री कुमार ने 2013-14 से मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल द्वारा एक वर्षीय अध्ययन अनुदान योजना के तहत कार्य किया। 2014 में बाल रंगमंच आर्ट एण्ड कल्चरल सोसाइटी की स्थापना की। बच्चों को मुफ्त नाट्य प्रशिक्षण देने वाले श्री कुमार ललित ना.मि. विश्वविद्यालय से नाट्यशास्त्र में स्नातकोत्तर करने के पश्चात एन.एस.डी., नई दिल्ली में प्रशिक्षक हुए। भारत के चर्चित रंग निर्देशक संजय उपाध्याय, बंसी कौल, आलोक चटर्जी, हेमा सिंह, आदि के निर्देशन के कई नाटकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कथासार- आजादी की लड़ाई के ऐसे अनेक साहसी नायक, जिनकी जांबाजी के किस्से सुनकर तन-मन रोमांचित हो उठता है। उन्हीं साहसी नायकों में हैं जुब्बा सहनी जिनका नाम बिहार के अग्रगण्य स्वतंत्रता सेनानियों में शुमार है। जुब्बा सहनी का जन्म 1906 में बिहार के मुजफ्फरपुर जिला के मीनापुर थाने के अंतर्गत चैनपुर बस्ती के अत्यंत निर्धन परिवार में हुआ था। निर्धनता के बावजूद बचपन से अत्यंत साहसी और स्वाभिमानी जुब्बा सहनी ने युवावस्था में ही भीखनपुर चीनी मिल के एग्रीकल्चर फार्म में अपने ऊपर हाथ उठाने वाले अंग्रेज सुपरवाइजर की पिटाई कर दी थी और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे। कई बार जेल भी जाना पड़ा था। अंग्रेजों की बर्बरता में अपनी पसलियां तुड़वाई। देश में करो या मरो का जज्बा था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 16 अगस्त, 1942 को जुब्बा सहनी ने अपने साथियों के साथ मीनापुर थाने पर धावा बोल दिया। अंग्रेज इंचार्ज लियो वालर ने गोलियाँ चलाई जिसमें उसके बड़े भाई बांगुर सहनी की मृत्यु हो गयी। इसी क्रोध में आकर उन्होंने लियो वालर को आग में जिंदा झोंक दिया था। जब उनके साथियों को पकड़ लिया गया तो उन्होंने सबकी जान बचाने के लिए आत्मसमर्पण कर दिया। ''वालर को मैंने मारा है... और किसी ने नहीं।'' ये सभी लोग निर्दोष हैं। फांसी मुझे दी जाए और हंसते-हंसते 11 मार्च, 1944 को फांसी पर चढ़ गए। उनको कोटि-कोटि नमन!

पात्र-परिचय

मंच पर-

दादी/दुलारी	-	पूर्णिमा कुमारी
पोता/बच्चा	-	आयुष कुमार
जुब्बा सहनी	-	राजेश कुमार
बांगुर सहनी	-	विजेन्द्र कुमार
सुख/पं नेहरू	-	कुणाल कुमार
बंगाली सुपरवाइजर/ अंग्रेजी सिपाही	-	राज लक्ष्मी
अंग्रेजी सिपाही-2	-	रोहित कुमार
अंग्रेज सुपरवाइजर/ लियो वालर	-	ऋषि कुमार
सरवन/मजदूर/ग्रामीण	-	सौरव कुमार
बेनी/ग्रामीण	-	आकाश कुमार

मंच परे

प्रकाश परिकल्पना	-	रवि वर्मा
अभिनय प्रशिक्षण	-	ऋषिकेश कुमार, रवि वर्मा
मंच सामग्री	-	ऋषि कुमार, राजेश कुमार, आयुष कुमार
वस्त्र विन्या	-	विजेन्द्र कुमार, सौरभ कुमार
रूप सज्जा	-	पूर्णिमा कुमारी, राज लक्ष्मी
पोस्ट/ब्रोशर	-	श्याम कुमार सहनी
संगीत ध्वनि	-	ऋषिकेश कुमार
प्रस्तुति प्रभारी	-	विजेन्द्र कुमार
लेखन एवं मंच परिकल्पना	-	श्याम कुमार सहनी
निर्देशन	-	श्याम कुमार सहनी ऋषिकेश कुमार
प्रकाश परिकल्पक	-	रवि वर्मा (MPSD)

SCAN AnyScanner

भीष्म प्रतिज्ञा

लेखक
डॉ. चतुर्भुज

22 फरवरी, 2025 (शनिवार)

परिकल्पक/निर्देशक
विजय आनन्द

प्रस्तुति- पुण्यार्क कला निकेतन, पंडारक (पटना)

निर्देशक- कलाश्री, पुण्यार्क कला सम्मान आदि से विभूषित रंगमंच को समर्पित आकाशवाणी ग्रेडेड कलाकार विजय आनंद का जन्म पंडारक (पटना) बिहार में हुआ। रेलवे की सेवा करते हुए इन्होंने लगातार 30 वर्षों से अपने रंगकर्म के माध्यम से कला के क्षेत्र को तीव्रता से बढ़ाने में सदैव तत्पर हैं । विभिन्न संस्थाओं निर्माण कला मंच, इप्टा, प्राची थियेटर यूनिट, किरण कला निकेतन, कला मंच और पुण्यार्क कला निकेतन के कई नाटकों में भूमिका और निर्देशन भी किया। ग्रामीण रंगमंच को सीमित संसाधनों के बल पर प्रायोगिक बिम्बों के साथ इस रंग शिल्प को दर्शकों के बीच समर्पित करते आ रहे हैं। इनके प्रमुख निर्देशित नाटक हैं- आसमान जोगी, वंदेमातरम्, बिदेसिया, घुँघरू, बेटी वियोग, बड़ा नटकिया कौन, गबरघीचोर, माटी हिन्दुस्तान की, घासीराम कोतवाल, हीर-रांझा, हारा हुआ सिकन्दर, मेघनाद, कलिंग विजय, कालसर्पिणी, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, टीपू सुल्तान, झांसी की रानी, कर्ण आदि।

कथासार- महाभारतकालीन पृष्ठभूमि पर आधारित नाटक 'भीष्म प्रतिज्ञा' शांतनु पुत्र देवव्रत के जीवन पर आधारित है। देवव्रत के प्रयास से निषाद कन्या सत्यवती का विवाह राजा शांतनु से होता है। देवव्रत प्रतिज्ञा लेते हैं कि वे आजन्म अविवाहित रहेंगे। शांतनु प्रसन्न होकर देवव्रत को वरदान देते हैं कि जिस पितृ भक्ति के वशीभूत होकर ऐसी कठिन प्रतिज्ञा ली है इसलिए तेरी मृत्यु तेरी स्वेच्छा से ही होगी। तेरी इस प्रकार की प्रतिज्ञा करने के कारण तू 'भीष्म' कहलाएगा और तेरी प्रतिज्ञा 'भीष्म प्रतिज्ञा' के नाम से सदैव प्रख्यात रहेगी।

शांतनु को सत्यवती से दो पुत्र चित्रांगदा और विचित्रवीर्य होते हैं। विचित्रवीर्य के जवान होने पर भीष्म उनके लिए दुल्हन लाने काशी की स्वयंवर सभा में उपस्थित होते हैं और काशी नरेश की तीनों कन्याओं का अपहरण कर लेते हैं। भीष्म द्वारा अपहरण की गई तीन लड़कियों में से एक अंबा जो सौभराज शाल्व से प्रेम करती थी जिसने उसे अपने स्वयंवर के लिए चुना था। भीष्म को जब यह बात पता चली तो उन्हें अपराधबोध हुआ और शाल्व के पास लेकर गए, परन्तु शाल्व विवाह करने से मना कर दिया। क्रोधित अंबा ने भीष्म से विवाह करने के लिए कहा लेकिन भीष्म ने अपनी प्रतिज्ञा बताते हुए विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। अंबा अपनी लड़ाई जारी रखने के लिए देवाधिदेव महादेव की घोर तपस्या की जिससे प्रभावित होकर भगवान शंकर ने वरदान दिया कि वह द्रुपद पुत्र शिखंडी नाम से जन्म लेगी जो भीष्म की मृत्यु का कारण बनेगा।

महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को भीष्म को मारने के लिए शिखंडी का उपयोग करने की योजना बनाई और इस प्रकार अर्जुन ने शिखंडी को अपने कवच के रूप में इस्तेमाल किया। भीष्म ने पूर्व जन्म में अंबा स्वरूप शिखंडी से लड़ने से इंकार कर दिया और इस प्रकार अर्जुन ने भीष्म को मारने का यह अवसर प्राप्त किया।

पात्र-परिचय

भीष्म प्रतिज्ञा (पात्र - परिचय :)

देवव्रत (भीष्म)	-	अक्षय कुमार
देवाधिदेव महादेव	-	राजेश कुमार
परशुराम	-	अभिषेक आनंद
श्रीकृष्ण	-	दिनेश कुमार
सुबन्धु	-	श्रीराम कुमार
शान्तनु	-	रविशंकर कुमार
धीवरराज	-	अशोक कुमार
विचित्रवीर्य	-	संजय जायसवाल
शाल्व	-	राकेश कुमार
दुर्योधन	-	विजय आनंद
अर्जुन	-	अजय कुमार
शिखण्डी	-	राहुल कुमार
सैनिक	-	कुन्दन कुमार गुप्ता, रविशंकर कुमार, अजय कुमार, राहुल कुमार
अम्बा	-	अपराजिता मिश्रा

मंच परे

व्यवस्थापक	-	राजेश कुमार, राकेश कुमार, सन्नु कुमार, अजय कुमार, राहुल कुमार
मेकअप	-	ब्लू आनंद
वस्त्र विन्यास	-	अशोक कुमार
संगीत	-	दिलीप शर्मा
प्रकाश परिकल्पना	-	अभिषेक आनंद
प्रकाश	-	धर्मेश मेहता
संयोजक	-	दिनेश कुमार
प्रस्तुति नियंत्रक सह-निर्देशक	-	रंगगुरू संजीव रंजन
	-	अक्षय कुमार

डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में मगध कलाकार और कला-जागरण द्वारा आयोजित ऐतिहासिक नाट्य समारोह में नाट्य-प्रस्तुतियाँ

20 से 26 फरवरी, 2011

20/2/11	वीरांगणा, पटना
21/2/11	यहूदी की लड़की, शाहजहाँपुर
22/2/11	1. कर्ण, पटना
	2. हिक्की सायबेर गजट, कोलकाता
23/2/11	विशु राउत, भागलपुर
24/2/11	माटी हिन्दुस्तान की, पंडारक
25/2/11	सीता बनवास, पटना
26/2/11	कुँवर सिंह, पटना

8 से 14 फरवरी 2012

8/2/12	उर्वशी, पटना
9/2/12	1. अपनी कथा कहो बिहार
	2. हारा हुआ सिकन्दर, पटना
10/2/12	कसम (WASAK), मणिपुर
11/2/12	गोपा, पटना
12/2/12	सत्य हरिश्चन्द्र, पटना
13/2/12	शताब्दी के स्वर
14/2/12	पाटलिपुत्र का राजकुमार, पटना

19 से 25 फरवरी 2013

19/2/13	कर्णभारम, बेगूसराय
19/2/13	उत्तर प्रियदर्शी, पटना
20/2/13	औरंगजेब की आखिरी रात, गुड़गाँव हरियाणा
21/2/13	आम्रपाली, पटना
21/2/13	रश्मिरथी, पण्डारक
22/2/13	चाणक्य, पटना
23/2/13	टीपू सुल्तान, मणिपुर
24/2/13	शॉपग्रस्त, पटना
25/2/13	कारागार, सहरसा

17 से 23 फरवरी 2014

17/2/14	कालिगुला, पटना
18/2/14	तोमार डाके, कोलकाता
19/2/14	काल सर्पिणी, पटना
20/2/14	नवा खोरी चिनाय, मणिपुर
21/2/14	नील कंठ निराला, पटना
22/2/14	मेघनाद, पंडारक
23/2/14	पोरस सिकन्दर, पटना

11 से 17 फरवरी 2015

11/2/15	अंधा युग, पटना
12/2/15	री-एक्सप्लोरेशन, कोलकाता
13/2/15	लैला मजनूँ, इलाहाबाद
14/2/15	भामाशाह, नई दिल्ली
15/2/15	सिराजुद्दौला, पंडारक
16/2/15	अंगुलीमाल, भागलपुर
17/2/15	कोंडू, मणिपुर

17-20 फरवरी, 2016

17/2/16	सम्राट अशोक, पटना
18/2/16	स्पार्टकस लेट्स फाइट, कोलकाता
19/2/16	मीरकासिम, पण्डारक
20/2/16	चाणक्य, बरौनी (बेगूसराय)

02-06 मार्च, 2017

02/3/17	शेरशाह सूरी, पटना
03/3/17	औरत की जंग, लखनऊ
04/3/17	टीपू सुल्तान, पण्डारक
05/3/17	साकार होता सपना, राँची
06/3/17	गांधी के चरण चम्पारण में, पटना

17-20 फरवरी, 2018

17/2/18	चार बांस चौबीस गज, पूर्णिया
18/2/18	एकलव्य, मध्य प्रदेश
18/2/18	एण्टिगोनी, कोलकाता
19/2/18	गोपा, पटना
20/2/18	झांसी की रानी, पंडारक
20/2/18	शम्बूक वध, पटना

04-06 मार्च, 2019

04/03/2019	विजेता, पटना
05/03/2019	पीरअली, वैशाली
06/03/2019	बुद्धम शरणम् गच्छामि, पटना
06/03/2019	कालसर्पिणी, पण्डारक

02-04 मार्च, 2020

02/03/2020	शिवाजी, पटना
03/03/2020	मोचें पर, पुनपुन (पटना)
04/03/2020	नूरजहाँ, पंडारक (पटना)

02-04 मार्च, 2021

02/03/2021	अरावली का शेर, पटना
03/03/2021	बुद्ध शरण गच्छामि, पटना
04/03/2021	मुद्राराक्षस, पंडारक

08 से 10 मार्च 2022

08/03/2022	पीरअली, कला जागरण, पटना
09/03/2022	बहादुरशाह, पुण्यार्क कला निकेतन, पंडारक
10/03/2022	कर्णभारम, किलकारी, पटना को प्रस्तुति

24 से 26 फरवरी, 2023

24/02/2023	रावण
25/02/2023	कर्ण
26/02/2023	आजादी

27 से 29 फरवरी, 2024

27/02/2024	श्रीकृष्ण, कला जागरण, पटना
28/02/2024	गगन दमामा बाज्यो, द स्ट्रगलर्स, पटना
29/02/2024	शकुन्तला, पुण्यार्क कला निकेतन, पंडारक

20 से 22 फरवरी, 2025

20/02/2025	'पाटलिपुत्र का राजकुमार', कला जागरण, पटना
21/02/2025	'क्रांतिकारी जुब्बा भाई' कलर व्हील, दरभंगा
22/02/2025	'भीष्म प्रतिज्ञा' पुण्यार्क कला निकेतन, पंडारक

SCAN AnyScanner

मगध कलाकार (MAGADH ARTISTS) की ओर से
डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में दिये जाने वाले सम्मान

मगध कलाकार और बिहार आर्ट थियेटर के सौजन्य से डॉ चतुर्भुज शिखर सम्मान:-

सन् 2010 : डॉ. जितेन्द्र सहाय- शल्य चिकित्सक और नाटककार
बेस्ट एक्टर : श्री अखिलेश्वर प्र. सिन्हा, **बेस्ट एक्ट्रेस** : श्रीमती सुचित्रा सिन्हा।

सन् 2011 : श्री गोपाल शरण- रंगमंच, रेडियो और फिल्म के कलाकार
बेस्ट एक्टर : श्री नन्दलाल सिंह **बेस्ट एक्ट्रेस** : सुश्री उज्ज्वला गांगुली, **श्रेष्ठ निर्देशक** : उपेन्द्र कुमार

सन् 2012 : श्री कृष्णानन्द- ऐतिहासिक उपन्यासकार, वरिष्ठ पत्रकार और नाट्य समीक्षक
बेस्ट एक्टर : श्री अमित श्रीवास्तव, **बेस्ट एक्ट्रेस:** श्रीमती अनीता कुमारी वर्मा

सन् 2013 : श्री गणेश सिन्हा-नाट्य निर्देशक, अभिनेता, और रंग-परामर्शी।
बेस्ट एक्टर : श्री राजवर्द्धन, **बेस्ट एक्ट्रेस** : सुश्री सविता श्रीवास्तव

सन् 2014 : श्री बच्चन लाल- अभिनेता, मेकअप मैन,

सन् 2015 : श्री रामदास राही- स्व. भिखारी ठाकुर के परिजन जिन्होंने उनकी अनमोल रचनाओं को संरक्षित रखा।
बेस्ट ऐक्टर : कुणाल कौशल, **बेस्ट ऐक्ट्रेस** : पूजा कुमारी

सन् 2016 : श्री अनिल पतंग- संपादक, नाटककार, कला साधक

सन् 2017 : प्रो. (डॉ.) समी खाँ, वरिष्ठ रंगकर्मी और रग चिंतक

सन् 2018 : श्री सतीश प्रसाद सिन्हा, व्यंग्य नाटककार

सन् 2019 : श्री अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा- रंगमंच, रेडियो, टेलीविजन कलाकार और नाटककार।

मगध कलाकार की ओर से डॉ. चतुर्भुज छात्रवृत्ति सम्मान:-

सन् 2010 : श्री अमित गुप्ता : श्रीमती रंजीता जयसवाल,

सन् 2011 : श्री सुनील कुमार सिंह, सुश्री साक्षी प्रिया,

सन् 2012 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, श्री राहुल कुमार

सन् 2013 : श्रीमती पुष्पा कुमारी, मो. आसिफ इकबाल

सन् 2014 : सुश्री मारिया प्रवीण, विशाल कुमार तिवारी

सन् 2015 : सुश्री कनीज फातिमा, श्री उदित कुमार

सन् 2016 : सुश्री कमल प्रिय, श्री श्याम बिहारी ठाकुर

सन! 2017 : श्री नीतीश प्रियदर्शी, सुश्री अदिति

सन! 2018 : श्री अभिषेक राज, सुश्री प्रियंशी

मगध कलाकार और कला-जागरण की ओर से डॉ. चतुर्भुज नाटक-पत्रकारिता सम्मान

सन् 2012 : श्री आशीष कुमार मिश्र- रंगकर्मी और पत्रकार, दैनिक हिन्दुस्तान, पटना।

सन् 2013 : श्री दीनानाथ साहनी- लेखक, पत्रकार और रंग समीक्षक, दैनिक जागरण, पटना।

सन् 2014 : श्री ध्रुव कुमार- रंगकर्मी, लेखक, स्वतन्त्र पत्रकार।

सन् 2015 : श्री साक़िब इक़बाल खाँ- रंग-पत्रकार, दैनिक भास्कर, पटना।

सन् 2016 : श्री रविराज पटेल- संस्थापक-सचिव, सिनेयात्रा/लेखक, पत्रकार, व्याख्याता, एस.ए.ई. कॉलेज, जमुई।

सन् 2017 : डॉ. लक्ष्मी कान्त सजल, लेखक (हिन्दी, मैथिली), पत्रकार, अनुवादक, दैनिक आज, पटना।

सन् 2018 : श्री सुमित कुमार, मुख्य संवाददाता, प्रभात खबर, पटना

सन् 2019 : श्री किशोर केशव, समाचार संपादक, राष्ट्रीय सहारा, पटना

सन् 2020 : श्री दीपक दक्ष, वरीय संवाददाता, हिन्दुस्तान (हिन्दी दैनिक) पटना

सन् 2021 : श्री दीपक प्रियदर्शी, रेजिडेंट एडिटर, R9Tv, बिहार

सन् 2022 : श्री प्रभात रंजन, दैनिक जागरण, पटना

सन् 2023 : सुश्री प्रीति सिंह, युवा पत्रकार, दैनिक भास्कर, पटना

सन् 2024 : सुश्री अनिमा कुमारी, युवा पत्रकार, दैनिक भास्कर, पटना

सन् 2025 : डॉ. उज्ज्वल कुमार, संपादक, दैनिक जागरण, I Next, पटना

स्थापित- 2011 निबंधन संख्या-914/2015-16

महान नाटककार स्व. डॉ. चतुर्भुज की स्मृति में सामाजिक,
सांस्कृतिक और पर्यावरण के क्षेत्र में समर्पित

चमन वेलफेयर ट्रस्ट

की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

Website : chamanwelfaretrust.org.
Email : chamanwelfaretrust@gmail.com
: ksrakshit5@gmail.com
Mob. : 9334123150

106, श्रीकृष्ण नगर,
पटना-800001 (बिहार)
भारत

चतुर्भुज-साहित्य

रंगमंचीय नाटक :-

पाटलिपुत्र का राजकुमार, कलिंग-विजय, सिकन्दर-पोरस, कालसर्पिणी, टीपू सुल्तान, रावण, मेघनाद, कंसवध, श्रीकृष्ण, कर्ण, भीष्म-प्रतिज्ञा, बन्द कमरे की आत्मा, नदी का पानी, भगवान बुद्ध, बाबू विरंचीलाल, मुद्राराक्षस, अरावली का शेर, नूरजहां, शिवाजी, सिराजुद्दौला, मीरकासिम, कृष्ण कुमारी, पीरअली, झांसी की रानी, कुंवर सिंह, मोर्चे-पर, बहादुरशाह, शाही अमानत, विजय के क्षण, बादल का बेटा, महिषासुर वध, कारागार, चतुर्भुज रचनावली (तीन खंडों में)।

उपन्यास/कथा संग्रह:-

समुद्र का पक्षी- (मनूची के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास), **राजदर्शन**- (मुंगेर का नवाब मीरकासिम के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास), **तथागत**- (भगवान बुद्ध के गृह-त्याग से उनके परिनिर्वाण तक की घटनाओं पर आधारित) **इतिहास बोल उठा**- (खोजपूर्ण ऐतिहासिक लेख संग्रह), **कमरे की छाया**- (उल्लेखनीय कहानी-संग्रह) **मेरी रंगयात्रा (आत्मकथा)**- डॉ॰ चतुर्भुज के संघर्षमय जीवन की कथा।

इतिहास :- औरंगज़ेब, भारत के बौद्ध विहार, प्रमुख भारतीय और विदेशी भाषाओं के नाटकों का इतिहास।

अंग्रेजी/ मैथिली/तमिल ग्रन्थ :- Memoirs of William Tayler (Commissioner of Patna in 1857), History of the Great Mughals, The Rani of Jhansi (Drama), The Great Historical Dramas (THE LION OF MAHARASHTRA, THE LAST MUGHAL EMPEROR), रावण (मैथिली और तमिल अनुवाद नाटक)।

अप्रकाशित- नाट्य शिल्प विज्ञान (हिन्दी), Raavan, Shri Krishn, Kans-Vadh, Pataliputra Ka Rajkumar, Peer Ali (Translated in English)

डॉ. चतुर्भुज लिखित उपर्युक्त सभी पुस्तकें, पाठकों/रंगकर्मियों/शोधार्थियों के लिए वेबसाईट www.chaturbhujdrama.com पर उपलब्ध है।

SCAN AnyScanner

मगध कलाकार और कला जागरण की ओर से प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटकों के अविस्मरणीय दृश्य।

THE TAPINDU URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.

Arunachal Bhawan, New Dakbunglow Road, Patna-800001
Phone No. 0612-2234203, 2201481
e-mail- ho@tucbl.in, website : tucbl.in

FACILITY AVAILABLE

- Monthly Income Scheme (MIS)
- Locker Facility
- Higher Rate of Interest on Deposite
- Instant Demand Draft & Bankers Cheque Issuance Facility
- Convenient & Flexible Loan Facility
- ATM (RUPAY CARDS)
- RTGS & NEFT IMPS AND QR CODE
- GOVT. TAX PAID, (INCOME TAX, GST)

SRI VISHAL SINGH
Chairman

AnyScanner

बिहार राज्य सहकारी बैंक लि०
THE BIHAR STATE CO-OPERATIVE BANK LTD.

International Year of Cooperatives 2025
Cooperatives Build a Better World

Ashok Rajpath, Patna - 800 004 | 916123505604 | helpdesk@biharscb.co.in, | www.biharscb.co.in

Loan Facilities & Schemes at BSCB Ltd.
ऋण सुविधाएं और योजनाएं

"सपनों को साकार करने का सही ऋण विकल्प आपके लिए"।

- Loan Against Property - संपत्ति पर ऋण
- SHG-Self Help Group - स्वयं सहायता समूह
- JLG-JointLiability Group - संयुक्त देयता समूह
- NSEL - महिला सशक्तिकरण ऋण (Nari Shakti Empowerment Loan)
- Home Loan - गृह ऋण
- Vehicle Loan - वाहन ऋण
- Education Loan - शिक्षा ऋण
- Gold Loan - गोल्ड ऋण
- Kissan Credit Card - किसान क्रेडिट कार्ड
- Personal Loan - व्यक्तिगत कर्ज़
- Over Draft - ओवर ड्राफ्ट

Deposit & Saving Scheme
जमा और बचत योजनाएँ

- सभी जमा योजनाओं पर आकर्षक लाभ (R.D.,F.D.,L.D.,S.T.D.,M.I.S.)
- PACS as DMA
- मोबाईल एप से एजेंटों के माध्यम से दैनिक जमा योजना
- जमा राशि पर 75% ऋण की सुविधा
- जमा राशि की जानकारी SMS से
- बाल बचत योजना (BBY)

Other Schemes & Facilities
अन्य योजनाएँ एवं सुविधाएँ

- नारी शक्ति उद्यमी योजना
- अटल पेंशन योजना
- प्रधानमंत्री जन धन योजना।
- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना
- बाल विकास योजना
- ई-स्टाम्पिंग और ई-कोर्ट सुविधाएँ
- प्रधानमंत्री स्वानिधि योजना
- QR Code सुविधाएँ

मनोज कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक

श्री रमेश चन्द्र चौबे
माननीय अध्यक्ष

"हर जमा के साथ मिले वित्तीय स्थिरता और बेहतर लाभ का भरोसा" "सही योजना के साथ सुरक्षित भविष्य की ओर कदम बढ़ाएँ।"

OUR BRANCHES :- BANKIPUR | NEW SACHIVALAYA | NEW MARKET | MAURALOK | KANKARBAGH | NALA ROAD | MUSSALAHPUR HAAT | MOTIHARI | BIHAT | DARBHANGA | CHAPRA | SAHARSA | MADHEPURA

*For all 'Terms & Conditions's and information/guidelines please visit BSCB branch | सभी नियम एवं शर्तों और सूचना/ दिशा निर्देशों के लिए कृपया BSCB शाखा पर जाएँ।

Printed by : Aditya Publication, Patna 9576099416

SCAN AnyScanner